डिजिटल मासिक पत्रिका, अंकः 50वाँ, अगस्त–2025, विक्रम संवत् 2082

विद्या भारती विद्यालय
सनातन धर्म
सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इण्टर कालेज
मिश्राना, लखीमपुर–खीरी ☎ 05872-796349 www.sdsvmbic.edu.in

सनातन स्वरा

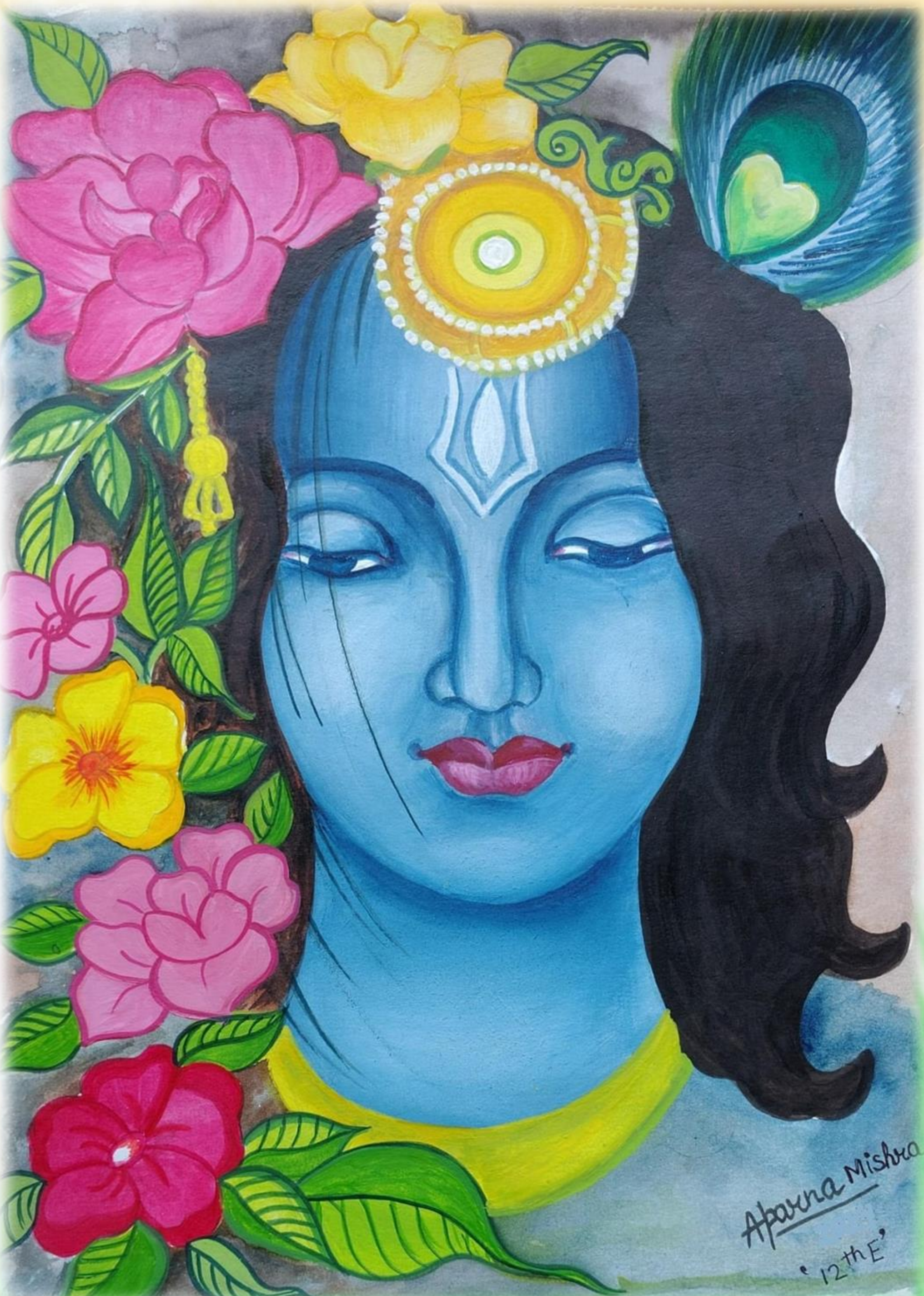

स्वतन्त्रता दिवस एवं जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएँ!

संरक्षक

श्रीमती रश्मि बाजपेई
अध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

डा. राकेश माथुर
उपाध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

मार्गदर्शक

श्री चन्द्र भूषण साहनी
प्रबन्धक
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

श्री तुषार गर्ग
कोषाध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

प्रधान सम्पादक

श्रीमती शिप्रा बाजपेई
प्रधानाचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

सह–सम्पादक

श्री राजेश दीक्षित
समाजसेवी

डॉ. सीमा मिश्रा
उपप्रधानाचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज,
लखीमपुर–खीरी

डॉ. विजय कुमार शुक्ल
प्रवक्ता
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज,
लखीमपुर–खीरी

तकनीकी मार्गदर्शक

श्री आशीष अवस्थी
सहा. आचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

श्री अरविन्द कुमार अग्निहोत्री
कार्यालय सहायक
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

अभिषेक कुमार
आई.ए.एस.

मुख्य विकास अधिकारी
लखीमपुरखीरी ।
फोन - 05872 272709,
दिनांक: 23 जुलाई, 2025

शुभ कामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इंटर कॉलेज, मिश्राना द्वारा विगत जुलाई,2021 से एक मासिक डिजिटल पत्रिका 'सनातन स्वरा' का सतत प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का 50वाँ स्वर्ण जयंती अगस्त,2025 अंक सनातनी संस्कृति और जीवन मूल्यों से नई पीढ़ी को जोड़ने के अपने लक्ष्य में निश्चय ही सफल हो सकेगा। डिजिटल पत्रिकाएँ विद्यार्थियों को राष्ट्रीयता, एकता, मानवता जैसे श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के साथ भारतीय संस्कृति से भी जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

इस पत्रिका में उपयोगी जानकारियो के प्रकाशन से जन सामान्य की ज्ञान वृद्धि और अध्ययन की रूचि जागृत करने में काफी सहायक होंगे। यह पत्रिका जन सामान्य के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की हार्दिक मंगलकामना करता हूँ।

भवदीय,

(अभिषेक कुमार)

सुमन हेल्थ क्लीनिक

मेन रोड, निकट इमली चौराहा, लखीमपुर–खीरी

डा॰ शिवम् मिश्र
बी.ए.एम.एस. (K.U.)
फिजीशियन
रजि. नं. 73181

डा॰ प्रणति नारायण मिश्रा
बी.ए.एम.एस. (K.U.)
गर्भ संस्कार विशेषज्ञ
(N.I.A. Jaipur)
रजि. नं. 72760

शुभकामना संदेश

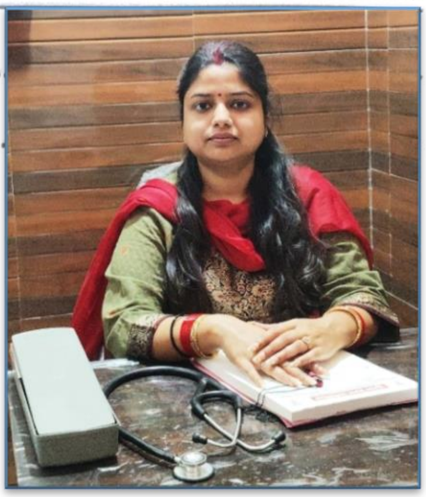

नाम ....

पता ....

℞

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदया एवं समस्त संपादक मण्डल,
सनातन धर्म सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इंटर कॉलेज,
लखीमपुर-खीरी।

आपका संस्थान बालिकाओं के उज्जल भविष्य का एक प्रकाशस्तंभ है। यहाँ की शिक्षण प्रणाली, नैतिक मूल्य एवं अनुशासन देखकर हृदय गर्व से भर उठता है। आप शिक्षा के साथ आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और संस्कारों का अमूल्य उपहार दे रहे हैं।

"सा विद्या या विमुक्तये" इस मूलमंत्र को आपने न केवल अपनाया, बल्कि उसे हर छात्रा के व्यक्तित्व में गूंथने का कार्य किया है। यह विद्यालय ज्ञान, करुणा और कर्तव्य का दीप प्रज्वलित कर रहा है।

आपकी डिजिटल पत्रिका "सनातन स्वर" इस विद्या मंदिर की रचनात्मकता, संस्कृति एवं छात्राओं की प्रतिभा को उजागर करने वाला एक सराहनीय मंच है। यह पत्रिका न केवल विद्यालय की गतिविधियों का दर्पण है, बल्कि छात्राओं के लेखन, कौशल, विचारशीलता और भावनात्मक अभिव्यक्ति को भी दिशा प्रदान करती है। इसका प्रत्येक अंक प्रेरणा, नवाचार और सनातन मूल्यों की सुगंध से परिपूर्ण होता है।

ऐसे पुनीत प्रयासों को मेरा नमन एवं कोटिशः शुभकामनाएँ।

शुभेच्छु,
डॉ॰ प्रणति नारायण मिश्रा

मिलने का समय : प्रातः 10-00 बजे से दोपहर 2-00 बजे तक, सायं 5-00 बजे से सायं 8-30 तक

।। पर्चा मेडिको लीगल के लिए मान्य नहीं ।। **सोमवार अवकाश** **मोबाइल नं.** 8400344340

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

सादर वंदन।

आप सभी पाठकों के स्नेह से पुष्पित पल्लवित होती हुई पत्रिका ने 50वें पायदान पर कदम रख लिया है।

पत्रिका के 50वें अंक के लिए बहुत–बहुत बधाई।

अगस्त का यह विशेषांक हमारे हृदय को गर्व, श्रद्धा और भक्ति के अद्भुत भावों से भर देता है। यह वह समय है जब देशभक्ति की भावना हर दिल में लहरों सी उमड़ती है, और भक्ति की मिठास हर मन को कृष्णमय कर देती है।

इस महीने हम भारत माँ की आज़ादी का 79वाँ उत्सव मनाने जा रहे हैं। 15 अगस्त केवल एक तारीख नहीं, बल्कि वह पवित्र दिन है जब गुलामी की बेड़ियाँ टूटीं, और हर भारतीय ने खुली हवा में साँस ली। यह स्वतंत्रता उन अनगिनत बलिदानों की अमानत है जो वीरों ने मुस्कुराते हुए मातृभूमि की चरणों में समर्पित कर दिए। जब हम तिरंगे को लहराते देखते हैं, तो उसमें छिपा होता है त्याग, संघर्ष और अनंत प्रेम– जो हमें अपने कर्तव्यों की याद दिलाता है।

और इसी माह में हम कृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व भी मनाएँगे– उस दिव्य क्षण का स्मरण जब स्वयं श्रीकृष्ण ने धरती पर जन्म लेकर धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश का संकल्प लिया। उनका जीवन एक जीवंत ग्रंथ है, जिसमें बाल–लीलाओं की सरलता, मित्रता की निष्ठा, और गीता के ज्ञान की गंभीरता समाहित है। वे हमें सिखाते हैं कि हर युग में अधर्म से लड़ने के लिए साहस, विवेक और प्रेम की आवश्यकता होती है।

यह अद्भुत संयोग है कि अगस्त हमें राष्ट्रप्रेम और ईश्वरभक्ति, दोनों से एक साथ जोड़ता है। यह हमें याद दिलाता है कि धरती और धर्म, दोनों की सेवा हमारा परम कर्तव्य है।

इस अंक में हम विद्यार्थियों की प्रतिभा, शिक्षकों के मार्गदर्शन, और विद्यालय की गतिविधियों के विविध रंगों को समेटने का प्रयास कर रहे हैं। आशा है, यह अंक आपके मन को छुएगा, विचारों को प्रेरणा देगा, और हृदय को भावविभोर कर देगा।

अगस्त माह के इस अंक में *अतिथि लेखकों के रूप* में सी.ए. श्री अमित गुप्ता जी द्वारा "चार्टर्ड अकाउन्टेंट्स डे", कर्नल सी.पी. मिश्रा जी द्वारा "सिन्दूर : एक काव्य कथा", डॉ0 नमिता श्रीवास्तव जी द्वारा "रक्षाबन्धन", डॉ0 पायल राय जी द्वारा "भारतरत्न अटल बिहारी बाजपेयी : पुण्य स्मरण", श्रीमती अमिता सिंह जी द्वारा "श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आध्यात्मिक एवं सामाजिक त्योहार है।", श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव जी द्वारा "भारत विभाजन विभीषिका दिवस – एक लहूलुहान आज़ादी की करुण कथा", श्री सर्वेश शुक्ला जी द्वारा "स्वतन्त्रता : अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व का बोध", श्री उपेन्द्र कुमार शुक्ल जी द्वारा "विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस", श्रीमती इन्दू अवस्थी जी द्वारा "महिला समानता दिवस", श्रीमती सुधा तिवारी जी द्वारा "गणेश चतुर्थी" एवं श्रीमती तृप्ति अवस्थी जी द्वारा "मेजर ध्यानचन्द्र – राष्ट्रीय खेल दिवस" पर आलेख पठनीय हैं।

पत्रिका के संदर्भ में आपकी प्रतिक्रियाएँ ई–मेल आई.डी. sdbalika@rediffmail.com पर सदैव अपेक्षित है।

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस और जन्माष्टमी की मंगलकामनाएँ।

जय हिंद! जय श्रीकृष्ण!

शिप्रा बाजपेई
प्रधानाचार्य

माह अगस्त – 2025 के महत्वपूर्ण दिवस

- 01 अगस्त – विश्व 'फेफड़े का कैंसर' दिवस
- 03 अगस्त – अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस (पहला रविवार)
- 06 अगस्त – हिरोशिमा दिवस
- 09 अगस्त – भारत छोड़ो दिवस, नागासाकी दिवस
- 09 अगस्त – रक्षाबंधन
- 10 अगस्त – विश्व जैव ईंधन दिवस
- 12 अगस्त – अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस
- 13 अगस्त – विश्व अंगदान दिवस
- 15 अगस्त – भारत का स्वतंत्रता दिवस
- 16 अगस्त – श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
- 16 अगस्त – भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई पुण्यतिथि
- 20 अगस्त – भारतीय अक्षय ऊर्जा दिवस
- 21 अगस्त – विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस
- 26 अगस्त – महिला समानता दिवस
- 27 अगस्त – गणेश चतुर्थी
- 29 अगस्त – राष्ट्रीय खेल दिवस (मेजर ध्यानचंद्र जी की जयन्ती)

जुलाई 2025– अंक में विजयी छात्राएं

कविता/आलेख (जूनियर वर्ग)– 1. प्रथम – अविका वर्मा 8B 2. द्वितीय – आरोही शर्मा 8A 3. तृतीय – मन्नतदीप गुप्ता 8A	कविता/आलेख (सीनियर वर्ग)– 1. प्रथम – आयुषी वर्मा 10C 2. द्वितीय – प्रज्ञा वर्मा 12B
चित्रांकन (जूनियर वर्ग)– 1. प्रथम – माही गुप्ता 8A 2. द्वितीय – सौम्या राठौर 8C 3. तृतीय – संस्कृति श्रीवास्तव 7A	चित्रांकन (सीनियर वर्ग)– 1. प्रथम – आयुषी पटेल 9A 2. द्वितीय – प्रज्ञा वर्मा 12B 3. तृतीय – प्रियंका गुपता 12D

हमारी गतिविधियाँ

गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम – 10.07.2025

श्रद्धा एवं कृतज्ञता की भावना के साथ मनाया गया गुरु पूर्णिमा पर्व। उपस्थित अतिथिगण, विद्यालय प्रबन्धक तथा विद्यालय की प्रधानाचार्य जी ने गुरु वेद व्यास जी के चित्र पर माल्यार्पण कर पूजन–वंदन किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्र सेविका समिति की श्रीमती विनीता त्रिपाठी जी, जिला कार्यवाहिका ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरु सेवा एवं राष्ट्र सेवा का भाव हमेशा हमारे अन्दर रहना चाहिए।

कॅरियर काउन्सलिंग – 11.07.2025

अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार ही कॅरियर चुने। कॅरियर काउन्सलिंग के द्वारा छात्राओं को दिखाई भविष्य की राह। छात्राओं को भविष्य हेतु उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के उद्देश्य से जिला सेवायोजन कार्यालय, लखीमपुर–खीरी द्वारा ''कॅरियर काउन्सलिंग'' आयोजित की गई। कार्यक्रम में मा0 सुश्री साक्षी डागुर, प्रभारी जिला रोजगार सहायता अधिकारी, कर्नल सी.पी. मिश्रा, अवकाश प्राप्त कर्नल भारतीय सेना एवं पूर्व सैनिक कल्याण अधिकारी, संगीत शिरोमणि डॉ0 रुचिरानी गुप्ता जी, श्री राजेश कुमार–सेवानिवृत्त अनुदेशक तथा प्रधानाचार्य श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी ने छात्राओं का मार्गदर्शन किया।

किशोरी विकास वर्ग – 19.07.2025

छात्राओं के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से एक दिवसीय संकुल स्तरीय किशोरी विकास वर्ग का आयोजन किया गया। संकुल स्तरीय किशोरी विकास वर्ग में संकुल के 13 विद्यालयों की लगभग 150 छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण में Thread Magic के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के सिलाई के टांके तथा ब्रेसलेट निर्माण, Non fire Cooking में मजीटो ड्रिंक, खजूर के लड्डू, सैगो फाक्सनेट, सलाद बनाना, Tech Spark के अन्तर्गत तकनीक के प्रयोग में सावधानियों के प्रति जागरुक किया गया एवं Craft के अन्तर्गत रंगीन पेपर से बुके बनाने की विधि बताकर छात्राओं के क्रियात्मक एवं रचनात्मक कौशल का विकास किया गया। इसके अतिरिक्त कराटे प्रशिक्षण एवं वर्तमान सामाजिक परिवेश की चुनौतियों से परिचित कराया एवं छात्राओं को इन चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा प्रदान की व युक्तियाँ बताईं।

विज्ञान सप्ताह – 24.07.2025 से 02.08.2025

प्रोफेसर प्रफुल्ल चन्द्र राय की जयन्ती के अवसर पर विज्ञान सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें स्लोगन प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कारगिल विजय दिवस – 26.07.2025

विश्व के कठिनतम युद्धों में एक कारगिल युद्ध की 26वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विद्यालय में 'कारगिल विजय दिवस' मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कर्नल सी.पी. मिश्रा जी, विद्यालय प्रबन्धक श्री चन्द्र भूषण साहनी जी एवं प्रधानाचार्य श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि ने अपने उदबोधन में कहा कि हमारे पैदल सैनिकों के अदम्य साहस एवं बलिदान से कारगिल में विजय प्राप्त की।

यमुना हाउस एक्टिविटी – 26.07.2025

आज दिनांक 26.07.2025 दिन शनिवार को विद्यालय मे हाउस एक्टिविटी की शुरुआत करी गई जिसमें विद्यालय की आचार्या (एवं यमुना हाउस इंचार्ज) सुश्री नेहा शर्मा जी द्वारा कक्षा 6 से 12 तक के यमुना हाउस के छात्रों में विभिन्न प्रकार की एक्टिविटी जैसे शब्द रचना क्विज़ जिसका शीर्षक (कारगिल विजय दिवस रखा गया) एवं शारीरिक खेल जैसी रचनात्मक गतिविधियां कराई गई, जिससे छात्रों में बौद्धिक एवं शारीरिक तथा सामान्य ज्ञान का विकास हो साथ ही छात्रों में टीम वर्क, नेतृत्व कौशल और खेल भावना को बढ़ावा मिले और इसका उद्देश्य छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करना था।

संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान – 1 से 30 जुलाई

माननीय मुख्य चिकित्सा अधिकारी जी के आदेशानुसार हर साल की तरह इस साल भी विद्यालय में संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान 1 जुलाई से 30 जुलाई तक चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे पोस्टर प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता आदि आयोजित की गईं।

चेस प्रतियोगिता – 12.07.2025

स्वास्थ्य परामर्श कैम्प – 21.07.2025

तुलसी दास एवं प्रेमचन्द्र जयन्ती – 31.07.2025

राखी निर्माण कार्यशाला एवं प्रतियोगिता – 31.07.2025

❋ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स डे – 01 जुलाई ❋

चार्टर्ड अकाउंटेंट्स डे – 1 जुलाई
"सीए: कड़ी मेहनत, ईमानदारी और आत्मविश्वास की पहचान"

तारीख: 1 जुलाई
अवसर: ICAI की स्थापना दिवस
उद्देश्य: देश के चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के योगदान का सम्मान

सीए कौन होता है?
चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) एक ऐसा पेशेवर होता है जो वित्त, कर, लेखा परीक्षा और सलाहकार सेवाओं में विशेषज्ञ होता है। ये देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं।

सीए बनने के लिए क्या चाहिए?

- मेहनत + अनुशासन + लगन
- 3 चरण: फाउंडेशन → इंटर → फाइनल
- आर्टिकलशिप (इंटरनशिप) अनिवार्य
- ICAI के नियमों का पालन

सीए क्या करता है?

- टैक्स प्लानिंग
- ऑडिटिंग
- फाइनेंशियल एडवाइजरी
- बिजनेस मैनेजमेंट सपोर्ट

विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा:
सीए बनना कठिन जरूर है, लेकिन नामुमकिन नहीं। अगर आपके भीतर लक्ष्य के लिए जुनून है, तो यह प्रोफेशन आपको ज्ञान, सम्मान और स्थिर भविष्य देता है।

इस सीए डे पर आइए प्रण लें कि हम भी कड़ी मेहनत और ईमानदारी के साथ अपने सपनों को साकार करेंगे।

सीए – एक ऐसा करियर, जो बनाता है आपको देश के विकास का भागीदार!
#CADay #FutureCA #StudentInspiration #1July #ICAI

सी.ए. श्री अमित गुप्ता
सदस्य
विद्यालय प्रबन्ध समिति

✵ सिन्दूर : एक काव्य कथा ✵

कश्मीर स्वर्ग था भारत का,
सुन्दरतम वातावरण जहाँ।
सम्यता, मनोरम दृश्य अनेकों,
थे आकर्षण केन्द्र यहाँ।।
वाशिन्दे भिन्न मजहबों के,
रहते थे एक साथ मिलकर।
होता था कभी विरोध नहीं,
पूजा, पद्धतियों को लेकर।।
पर जैसे रात चांदनी की,
चोरों को रास नहीं आती।
वैसे ही देश द्रोहियों को,
समरसता कभी नहीं भाती।।
बस इसी सोच वालों ने ही,
अलगाव वाद फैलाया था।
कट्टरपंथी विचार द्वारा,
आतंकवाद फिर आया था।।
अब ठेकेदार मजहबों के,
भोली जनता भड़काते थे।
नेता भी इनसे मिलकर के,
जाहिर है, मौज उड़ाते थे।।
इसलिए बहुत दिन तक प्रदेश ने,
देखा कोई विकास नहीं।
भयभीत हो गयी थी जनता,
खुद पर भी था विश्वास नहीं।।
जब हटा तीन सौ सत्तर तो,
माहौल अचानक बदल गया।
अब कश्मीर के लोगों में,
जग गया एक उत्साह नया।।
कुछ ही बर्सों में लोग यहाँ,
क्या है विकास जानने लगे।
अपना लद गया जमाना है,
गद्दार सभी मानने लगे।।

जब हिन्दू, मुस्लिम एक साथ,
सहयोगी पुनः लगे होने।
अलगाव सोच वाले नेता,
खुद अपनी भूमि लगे खोने।।
अब पाकिस्तान पड़ोसी को,
भी चैन न बिल्कुल आता था।
सम्पन्न हो रहा काश्मीर,
फूटी आँखों न सुहाता था।।
ऐसे में भारत में उसने,
आतंक पुःन फैलाना था।
हिन्दू, मुस्लिम को आपस में,
फिर किसी तरह लड़वाना था।।
बाइस अप्रैल चुना उसने,
सन् दो हजार पच्चीस वाला।
जब पहलगाम में महिलाओं का,
था सिन्दूर मिटा डाला।।
जो भी सैलानी दिखे वहाँ,
उनको मजहब में बांट दिया।
और छोड़ मुसलमानों को,
चुन–चुन छब्बिस हिन्दू काट दिया।।
इनके आकाओं ने सोचा,
अब सफल प्लान उनका होगा।
पूरे भारत में मुसलमान,
हिन्दू में जब बलवा होगा।।
लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं,
भारत की जनता समझदार।
हिन्दू, मुस्लिम सब एक रहे,
उनका खाली पड़ गया वार।।
लेकिन सेना ने ठान लिया,
सिन्दूर का मोल चुकाना है।
आतंकवाद के आकाओं को,
चुन–चुन कर धूल चटाना है।।
आ गयी रात छः सात मई,
सिन्दूर किया जब सेना ने।
सीमा के पार नौ जगह पर,

बरबाद किये उनके अड्डे।।
घुस कर मारे सब आतंकी,
उनकी औकात दिखाने को।
भारत है आज नया भारत,
दुनिया को भी बतलाने को।।
लेकिन फिर भी कुछ लोग जिन्हें,
सिन्दूर ही नहीं भाया था।
अपनी सेना पर इन लोगों ने,
उँगली पुःन उठाया था।।
गद्दार देश में भरे पड़े,
जो भारत के ही दुश्मन हैं।
पलते, बढ़ते हैं यहीं मगर,
भारत विरोध इनके मन हैं।।
ऐसे लोगों को चिन्हित कर,
निश्चित दण्डित करना होगा।
बरगला रहे जो जनता को,
उन पर लगाम कसना होगा।।
भारत की सेना सक्षम है,
अपना तो काम करेगी ही।
पर ऐसे देश द्रोहियों पर,
सेना की सदा नहीं चलती।।
यदि इनकी कसी लगाम नहीं,
परिणाम न पूरा आयेगा।
अलगाव मिटेगा नहीं और,
आतंक फैलता जायेगा।।
सीमा के पार दरिन्दे हैं,
दहशत गर्दी फैलाते हैं।
पर सफल तभी होते हैं जब,
सहयोग यहाँ पा जाते हैं।।
इसलिये देश के अन्दर की,
गंदगी साफ करना होगा।
खुशहाल तभी भारत होगा,
सिन्दूर नहीं करना होगा।।
जय हिन्द!

कर्नल सी.पी. मिश्रा
अव0प्रा0

रक्षा बन्धन

सत्य सनातन पुण्य लाभ योग भूमि अनादि अनंत माँ भारती है जो सदैव ही प्रकृति सुरक्षा–संरक्षा का लक्ष्य अपने आप में समाहित किए है। इस शस्य श्यामला धरा की हम सन्तान हैं और प्रकृति को अपनी माँ मानकर सर्वदा पूजा भी करते हैं। यही पूज्य भाव के प्रतिफल से हमारे घरों में तिथिवार पर्व, व्रतों का अनुष्ठान होता रहता है।

हमारी भारतीय संस्कृति के समस्त रीति–रिवाज, परम्परा और धार्मिक लोकाचार में एक घटक – वैज्ञानिकता भी समाहित है। जिसका एक बिन्दु सूर्य–चन्द्र है जो हमारी ऊर्जा का केन्द्र बिन्दु है और उनके गतिमान रूप से दिन–रात, माह–वर्ष, मौसम और ऋतुओं का निधारण होता है। षट ऋतुओं में एक ऋतु वर्षा ऋतु है जिसका एक माह जो शिव–पावर्ती की आस्था–भक्ति से पूरित है, उसकी पूर्णिमा तिथि को मनाया जाने वाला लोक मंगलमयी पर्व है "रक्षा बंधन"। रक्षाबंधन जो दो शब्दों का योग है, उसमें 'रक्षा' का अर्थ सुरक्षा प्रदान करना और सुरक्षा करने वाला एक व्रती ही बंधन का प्रतीक है।

इस तरह रक्षा–बंधन दो पक्षों के मध्य पावन सुरक्षा–संरक्षा का एक प्रगाढ़ दृढ़ संकल्पित पर्व है। रक्षाबन्धन की एक पौराणिक सर्व विदित कथा है जो अस्तु है–

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेनत्वां प्रतिबद्धनामि रक्षे मा चल मा चल।।

अर्थात् जिस रक्षा सूत्र से महान शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बांधा गया, उसी सूत्र से मैं तुझे बांधता हूँ। हे रक्षे (राखी) तुम अडिग रहना। तू अपने संकल्प से कभी भी विचलित न हो।

कथानुसार– उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए रक्षा सूत्र पहली बार बांधा गया था। विष्णु पुराण के अनुसार जब प्रभु का वामानावतार हुआ और दानवीर बलि से तीन पग में तीनों लोक को नाप लिया गया और प्रसन्न होकर जब राजा बलि को पाताल लोक का राजा बना दिया गया, वही राजा बलि ने यह भी कहा कि आप सदा हमारे साथ रहेंगे। इससे भगवान उनके साथ चले गये। तब देव ऋषि नारद से उपाय पूछकर देवी लक्ष्मी माँ ने उक्त मन्त्र पढ़कर राजा को 'रक्षा–सूत्र' बांधकर अपने स्वामी विष्णु जी को देवलोक वापस ले आयी थीं।

दूसरी कथा– देरराज इन्द्र औ असुरों के मध्य युद्ध चल रहा था तब देवी शची ने अपने स्वामी इन्द्र के हाथ में रक्षा–सूत्र बांध कर उन्हें शक्ति और विजय प्राप्त करायी थी।

एक अन्य *पौराणिक कथानुसार* महाभारत काल में जब शिशुपाल वध हुआ उस समय भगवान श्रीकृष्ण के घायल हाथ पर द्रोपदी, जिनका नाम कृष्णा था, अपनी साड़ी के टुकड़े से बांधकर बहते खून को रोका था। उस रक्षा सूत्र के मान स्वरूप प्रभु कृष्ण ने सदा भाई बनकर उनकी रक्षा की। अस्तु युगों–युगों से भाई–बहन के पवित्र पावन प्रेम, आस्था का यह त्योहार हर वर्ष इसी आशा–विश्वास से मनाया जाता है कि यह हमारी, परिवार समाज और राष्ट्र को सुदृढ़ता और संरक्षता प्रदान करे। इस बंधन से मात्र भाई–बहन की रक्षा ही नहीं अपितु असुरक्षित सभी पहलुओं को सुरक्षा मिले यह भाव है। यह पवित्र सूत्र हमारे ऋषि–मुनि और पुरोहित अपनी ज्ञान की सुदृढ़ डोर से कालान्तर से बांधते आ रहे हैं। जिससे यह सार्थकता प्रतीत होती है कि यह तिथि पर्व सृष्टि में हर वस्तु, पदार्थ और प्राणी की सुरक्षा संरक्षा का वचन दिलाता है, जो कही से भी असुरक्षित है। फिर चाहे वह हमारी शक्ति स्वरूप भगिनी हो या धर्म संकट में घिरा स्वामी या फिर नैतिक और जीवन मूल्यों च्युत भ्रात–जन या हमारी असुरक्षित प्रकृति।

आइए अन्ततः इस युवा शक्ति से प्रथम अपने राष्ट्र के साथ शपथ लें कि इस श्रावण माह की हरियाली, शीतलता पूर्ण पूर्णिमा को हम वचन बद्ध होकर अपनी शस्य श्यामला प्रकृति की मूल प्रकृति शक्ति बहनों और प्रकृति रूपी भगिनी के साथ सृष्टि के समस्त घटकों की रक्षा कर अपने राष्ट्र को सदा–सदा पूज्यनीय बनाकर रक्षा–बन्धन के पर्व को मनाएंगे।

डॉ0 नमिता श्रीवास्तव
शिक्षिका

✵ विश्व जैव ईंधन दिवस ✵

विश्व जैव ईंधन दिवस प्रत्येक वर्ष 10 अगस्त को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य जैव ईंधन के महत्व के बारे में जागरुकता फैलाना और पारंपरिक जीवाश्म ईंधनों पर हमारी निर्भरता को कम करना है। यह दिन हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखने और सतत् विकास की दिशा में कदम उठाने की प्रेरणा देता है।

विश्व जैव ईंधन दिवस का उद्देश्य :–

- जैव ईंधन के लाभों के बारे में जागरुकता फैलाना।
- नवीकरणीय ऊर्जा के महत्व को समझाना।
- पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के उपायों को बढ़ावा देना।
- देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना।

विश्व जैव ईंधन दिवस की शुरुआत उस दिन की याद में की गई जब 10 अगस्त, 1993 को जर्मन वैज्ञानिक सर रूडोल्फ डीजल ने पहली बार मूंगफली के तेल से डीजल इंजन चलाया।

भारत में जैव ईंधन मिशन : भारत सरकार की पहल

भारत सरकार ने राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति – 2018 लागू की है, जिसके तहत निम्नलिखित बिन्दु सम्मिलित हैं :–

- इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम।
- जैव डीजल उत्पादन को बढ़ावा देना।
- कचरे से जैव ईंधन।

जैव ईंधन के लाभ :–

- पर्यावरण अनुकूलन नवीकरणीय ऊर्जा
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती
- आयातित तेल पर निर्भरता में कमी

निष्कर्ष :– विश्व जैव ईंधन दिवस हमें यह याद दिलाता है कि पारंपारिक ईंधनों के स्थान पर वैकल्पिक, स्वच्छ और हरित ऊर्जा स्रोतों को अपनाना न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी फायदेमंद है। यह दिन सतत् विकास की दृष्टि में एक महत्वपूर्ण कदम है।

निधि शुक्ला
सहा0 अध्यापिका

❋ भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी : पुण्य स्मरण (16 अगस्त) ❋

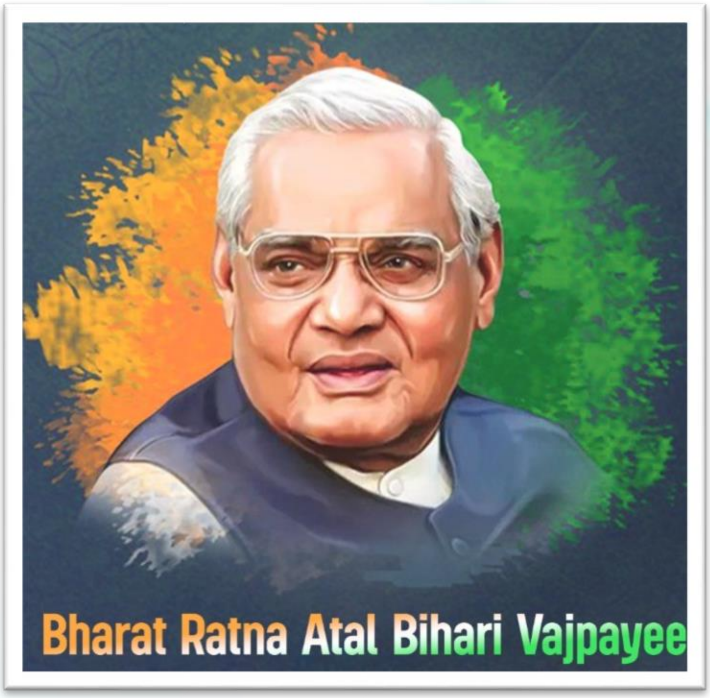

भारतवर्ष की पुण्यभूमि पर 25 दिसम्बर, 1924 को ब्रह्ममुहुर्त में ग्वालियर निवासी ब्राह्मण कृष्ण बिहारी बाजपेयी के घर एक बालक का जन्म हुआ। कृष्ण बिहारी बाजपेयी आगरा जनपद के प्राचीन स्थान बटेश्वर के मूल निवासी थे किंतु जीविकोपार्जन हेतु मध्यप्रदेश की ग्वालियर रियासत में अध्यापक थे। अध्यापन कार्य के साथ–साथ हिन्दी व ब्रज भाषा में काव्य रचना भी करते थे। अटल जी की माताजी कृष्णा बाजपेयी अत्यन्त सरल स्वभाव की धर्मपरायण स्त्री थीं।

अटल जी की प्रारम्भिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर से हुई। बी0ए0 की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (वर्तमान में लक्ष्मीबाई कॉलेज) में हुई। अटलजी का प्रभावशाली व्यक्तित्व उनके कॉलेज स्तर के विद्यार्थी जीवन से ही स्पष्ट होने लगा था। छात्र जीवन से ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने लगे थे।

कानपुर के डी.ए.वी. कालेज से राजनीति शास्त्र में प्रथम श्रेणी में एम0ए0 करने के बाद अपने पिताजी के साथ–साथ एल.एल.बी. की पढ़ाई प्रारम्भ की लेकिन उसे बीच में ही छोड़कर अटल जी पूर्ण समर्पण के साथ संघ के कार्य में जुट गए। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल को अपना गुरु मानकर राजनीति की बारीकियाँ सीखी और साथ–साथ पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसी पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लिया। भारतीय जनसंघ की स्थापना करने वालों में से एक अटल जी ने सन् 1968 से 1973 तक उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद भी संभाला। सन् 1952 में पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ा और हार मिली। परंतु हार नहीं मानने वाले अटल जी 1957 में फिर से चुनाव लड़कर लोकसभा पहुँचे। 1957 से 1977 तक जनता पार्टी की स्थापना तक लगातार 20 वर्ष तक जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे। 1980 में जनता पार्टी से असन्तुष्ट होकर भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में मदद की और इन्हें अध्यक्ष पद का दायित्व मिला।

भारत के प्रधानमंत्री पद को अटलजी ने तीन बार सुशोभित किया और अपने कार्यकाल में इन्होने विश्व पटल पर भारत का गौरव बढ़ाया। पहली बार 13 दिन के लिए, दूसरी बार 8 माह और तीसरी बार पूरे 5 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण करते हुए 22 मई, 2004 तक अटल जी भारत के प्रधानमंत्री रहे।

अटलजी के इरादे भी अटल ही रहते थे। 1998 का पोखरण–2 परमाणु परीक्षण इसी का उदाहरण है। इस परमाणु परीक्षण के बाद भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न देश घोषित कर दिया गया।

1999 के कारगिल युद्ध के समय अटल जी निरंतर सेनाओं का मनोबल बढ़ाते रहे और हमारे वीर सैनिकों ने पाकिस्तानी सेना को अपनी सीमा से दूर धकेलकर उनके नापाक इरादों को ध्वस्त कर दिया। अपने कार्यकाल के दौरान देशहित को सर्वोपरि रखते हुए अटल जी ने कई महत्वपूर्ण योजनाओं को आकार दिया यथा– स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना, सौ वर्ष से ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद का निपटारा, कोंकण रेलवे की शुरुआत, ऐसी अनेक योजनाएँ जिनसे देश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर रहे।

अटलजी अपने जीवनकाल में दस बार लोकसभा और दो बार राज्यसभा के लिए चुने गए। 2005 के अंत में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के चलते सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया।

1992 में अटलजी को भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान *'पद्म विभूषण'* मिला। अटल जी का व्यक्तित्व ऐसा था कि उनके दल के सभी लोग ह्रदय से उनका सम्मान करते ही थे, साथ विपक्षी दलों के लोग भी उनके प्रति सदैव सम्मान का भाव रखते थे। सन् 1994 में इन्हें सर्वश्रेष्ठ सांसद का पुस्कार मिलना इसी भाव का घोतक है।

2015 में अटल जी को भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान *'भारत रत्न'* से सम्मानित किया गया और इसी वर्ष बांग्लादेश सरकार ने 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान बांग्लादेश की स्वतंत्रता के समर्थन के लिए फ्रेंडस ऑफ बांग्लादेश वॉर अवार्ड से सम्मानित किया।

अटल जी की जयंती 25 दिसम्बर पूरे भारत में सुशासन दिवस के रूप में मनाई जाती है।

अटल जी पहले विदेश मंत्री थे जिन्होने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर भारत को गौरवान्वित किया तथा अपनी हिन्दी भाषा को विशेष सम्मान दिलाया। ये राजनीति में जितनी गहरी दिलचस्पी रखते थे उतना ही अपने कविरूप को लेकर सजग भी थे। अटल जी को काव्य के गुण वंशानुगत परिपाटी से प्राप्त हुए। महात्मा रामचन्द्र वीर द्वारा रचित अमर कृति 'विजय पताका' पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा बदल गई थी। उनकी कविताओं में उनका राष्ट्रप्रेम और सनातन धर्म के प्रति विशेष आस्था परिलक्षित होती है। ''मेरी इक्यावन कविताएँ'' अटल जी का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। किशोरवय में ही अटल जी ने अपना परिचय देती हुई कविता लिखी –

हिन्दू तन–मन हिन्दू जीवन,
रग–रग हिन्दू मेरा परिचय।

मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम और समर्पण का भाव रखने वाले ओजस्वी अटल जी लिखते हैं–

दुनिया का इतिहास पूछता,
रोम कहाँ यूनान कहाँ है?
घर–घर में शुभ अग्नि जलाता,
वह उन्नत ईरान कहाँ है?

दीप बुझे पश्चिमी गगन के,
व्याप्त हुआ बर्बर अँधियारा,
किंतु चीर कर तम की छाती,
चमका हिन्दुस्तान हमारा।

शत–शत आघातों को सहकर,
जीवित हिन्दुस्तान हमारा।
जग के मस्तक पर रोली सा,
शोभित हिन्दुस्तान हमारा।

अटलजी की कविताएँ गिरते मनोबल को ऊँचा उठाने का सामर्थ्य रखती हैं। आज की युवा पीढ़ी जो जरा–सी असफलता पर हार मान लेती है, व्यवस्था पर दोषारोपण करने लगती है, कर्तव्यों को पूरा किये बिना ही अधिकार माँगती है। ऐसी युवा पीढ़ी को अटल जी की कविताओं को अवश्य पढ़ना चाहिए। ऐसा ही संदेश इन पंक्तियों में भी है–

क्या हार में क्या जीत में,
किंचित नहीं भयभीत मैं।
कर्तव्य पथ पर जो मिला,
यह भी सही वह भी सही।
वरदान नहीं मांगूगा,
हो कुछ भी पर हार नहीं मानूंगा,
हार नहीं मानूंगा।

अटल जी मौत से भी दो–दो करने का हौसला रखते थे। वे लिखते हैं–

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूं,
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूं।
तू दबे पांव, चोरी–छिपे से न आ,
सामने वार कर, फिर मुझे आजमा।

काल के कपाल पर वे गीत नया लिखते हैं, गाते हैं –

हार नहीं मानूँगा, रार नहीं ठानूँगा,
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

जीवन के अंतिम समय में भी अनेकों बीमारियों से जूझते रहे। अंतिम समय में उनकी दत्तक पुत्री नमिता भट्टाचार्य व उनके पति रंजन भट्टाचार्य अटल जी की सेवा में रहे। 16 अगस्त, 2018 को माँ भारती के अनन्य सेवक ने अंतिम प्रणाम कर विदा ली।

अटल बिहारी बाजपेयी भारतीय राजनीति के ऐसे नायक थे जिन्होंने राजनीति के शीर्ष पर रहते हुए भी राजनीति के मूल्यों को जीवित रखा और अपने व्यक्तित्व, विचारधारा और नेतृत्व क्षमता से भारत को विकास के पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर किया। वे एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रखर वक्ता, दूरदर्शी नेता और कवि थे। उनकी सादगी, सहजता और विनम्रता ही उनके विशिष्ट गुण थे और इन्हीं गुणों के बल पर वे आज भी हमारे दिलों में बसे हुए हैं। 16 अगस्त उनकी पुण्यतिथि पर हम भारतवासियों का शत्–शत् नमन।

डॉ0 पायल राय
प्राचार्य
उस्मानी डिग्री कॉलेज
लखीमपुर–खीरी

❋ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आध्यात्मिक एवं सामाजिक त्योहार है। ❋

चित्रांकन–अवंतिका तिवारी–7C

श्री कृष्ण जन्माष्टमी आध्यात्मिक जागृति और आत्म–साक्षात्कार का प्रतीक है। हमारे हिन्दू धर्म में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का विशेष महत्व है। यह भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव है, जो भगवान विष्णु के आठवें अवतार माने जाते है।

जन्माष्टमी का त्योहार भाद्रपक्ष महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। यह भगवान श्री कृष्ण की पूजा और आराधना का दिन है। यह त्योहार सामाजिक एकता और भक्ति का प्रतीक है।

जन्माष्टमी एक सामाजिक त्योहार है, जो समुदाय और एकता की भावना को बढ़ावा देता है। ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण आनन्द एवं प्रसन्नता के प्रतीक हैं। अतः हम किसी भी खुशी को उत्सव के माध्यम से व्यक्त करते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि जन्माष्टमी आनन्द के जन्म का उत्सव है अर्थात् जन्माष्टमी वह दिन है जब एक दिव्य आनन्द प्रकट हुआ।

अतः जो परमात्मा अर्थात सर्वव्यापी एक चेतना को उस आनन्द तत्व के रूप में पहचानता है, जो सम्पूर्ण सृष्टि में प्रकट है वही सच्चे अर्थों में बुद्धिमान है। इस प्रकार यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जो कुछ भी इस सृष्टि में व्याप्त है, सब कुछ उस आनन्द–तत्व से ही उत्पन्न हुआ हैं। श्री कृष्ण जन्माष्टमी का यही विशेष सन्देश है। यदि हमें ईश्वर को जानना है उसे पहचानना है प्राप्त करना है या उसकी भक्ति को प्राप्त करना है तो हमें हृदय से सच्चा और ईमानदार बनना होगा।

यदि हम आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के विषय में देखे तो भगवान कृष्ण की माता देवकी भौतिक शरीर का प्रतिनिधित्व करती हैं। जब कि भगवान कृष्ण के पिता वासुदेव प्राण अर्थात् जीवन भक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए जब प्राण शरीर में प्रवाहित होता है तब आनन्द का जन्म होता है।

संस्कृति और परम्पराओं का संरक्षण :– जन्माष्टमी एक महत्वपूर्ण हिन्दू त्योहार है, जो हमारी संस्कृति और परम्पराओं को जीवित रखने में मदद करता है।

भगवान श्री कृष्ण को आनन्द के रूप में दर्शाया गया है और भगवान कृष्ण के मामा कंस को अहंकार के रूप में दर्शाया गया है। इस प्रकार अहंकार आनंद को नष्ट करना चाहता है। अतः जहाँ आनन्द है, वहाँ अहंकार नहीं हो सकता। भगवान श्रीकृष्ण प्रेम और आनन्द के प्रतीक हैं। प्रेम, खुशी और स्वाभाविकता ये तीनों अहंकार के सबसे बड़े दुश्मन हैं। यही कारण है कि अहंकार और प्रेम के बीच युद्ध होता है, क्योंकि जब प्रेम भीतर जागता है तो अहंकार स्वतः ही पिघल जाता है और नष्ट हो जाता है। यहाँ कंस अहंकार का प्रतिनिधित्व करता है। जब कोई खुशी और आनन्द नहीं होता है तो शरीर एक जेल की

तरह लगता है इसलिए जब प्रेम अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण ने इस शरीर रूपी जेल में जन्म लिया तो सभी इन्द्रियाँ जो कि जेल के प्रहरियों के प्रतीक हैं सो गई। पाँच इन्द्रियाँ आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा जो कि शरीर के रक्षक हैं और ये हमेशा खुशी और प्रसन्नता के लिए बाहर की ओर देखते हैं। वास्तव में कंस अहंकार का रक्षक है जो आनन्द को पराजित करने का प्रयास करता है जो व्यक्ति खुशी के स्रोत की ओर मुड़ता है तो अहंकार धीरे–धीरे गायब होने लगता है। इस प्रकार जब आनंद अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ तो उनकी सुरक्षा के लिए या कहें कि कंस रूपी अहंकार से सुरक्षा के लिए उन्हें दूसरी जगह ले जाना पड़ा। इसलिए जन्म के बाद श्री कृष्ण वृन्दावन में नन्द और देवी यशोदा के घर गये।

निष्कर्ष रूप में हम कुछ कह सकते है कि हमें केवल अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए। उनके परिणाम की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, जैसा कि गीता में कहा गया है –

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन।"

अमिता सिंह
प्रधानाचार्य
स0बा0वि0मं0इ0का0, बाँदा

❉ स्वतन्त्रता के उल्लास में विभाजन की त्रासदी को न भूलें ❉

- मजहब राष्ट्रीयता का निर्धारक तत्व हो ही नहीं सकता।
- एक राष्ट्र, एक जन, एक संस्कृति हमारी सनातन राष्ट्रीयता का प्राण तत्व।
- राष्ट्र विभाजन के जिम्मेदार लोगों को *न भूलें, न माफ* करें।

पन्द्रह अगस्त जहाँ इस राष्ट्र जीवन में स्वतन्त्रता का उत्साह, उल्लास लेकर आया वहीं दूसरी ओर उसमें विभाजन की कटु त्रासदी समाहित थी। जिस आधार पर राष्ट्र का विभाजन तक हो गया जो सामान्य बात नहीं थी, छोटी बात नहीं थी वह विभाजन का आधार ही अपने आप में गलत था। मजहब राष्ट्रीयता का निर्धारक तत्व हो ही नहीं सकता। एक राष्ट्र, एक जन एक संस्कृति हमारी सनातन राष्ट्रीयता का प्राण तत्व है। हमारे यहाँ हमेशा भाषा, खान–पान, उपासना पद्धति की विविधता रही जिसे हम लोगों ने न केवल माना अपितु खुले मन से पूरे अन्तर्मन की गहराई से स्वीकार किया।

राजेश दीक्षित
सामाजिक कार्यकर्ता

❋ भारत विभाजन विभीषिका दिवस ❋

एक लहूलुहान आज़ादी की करुण गाथा

आज़ादी का सूरज तो उगा...... पर लाखों सपनों की चिताएँ बुझा कर।

14 अगस्त, यह तारीख़ इतिहास में सिर्फ़ पाकिस्तान के गठन की नहीं, बल्कि भारत की आत्मा पर पड़े गहरे घाव की साक्षी है। यह वह दिन है जिसे हम *भारत विभाजन विभीषिका दिवस* के रूप में याद करते हैं। 1947 में खींची गई सरहद की लकीर ने महज़ ज़मीन नहीं बाँटी, इसने इंसानियत, विश्वास और सांझी विरासत को भी टुकड़े–टुकड़े कर दिया। जिस आज़ादी के लिए गाँधी ने सत्याग्रह किया, भगत सिंह ने फाँसी का फंदा चूमा, और हजारों क्रांतिकारियों ने बलिदान दिए वही आज़ादी आई, पर ऐसी कीमत पर, जो मानव सभ्यता के इतिहास में शायद ही कभी चुकाई गई हो। खून से सनी रेलगाड़ियाँ, जलते गाँव, अपनों से बिछुड़ते चेहरों की चीख पुकार.......... ये सब उसी विभाजन की भयावह परछाइयाँ थीं। घर था, आँगन था, तुलसी थी......... अब क्या है? कितनी ही माँओं की गोदें सूनी हुईं, कितने ही बच्चों का बचपन ट्रेन की छतों पर दम तोड़ गया। लाहौर, रावलपिंडी, दिल्ली, अमृतसर, ढाका हर शहर, हर बस्ती जैसे एक–दूसरे की राख में तब्दील हो गई थी। विभाजन के आँकड़े कोई सरकारी दस्तावेज़ नहीं, बल्कि करोड़ों बिखरे सपनों की गिनती थे। 15 लाख से अधिक लोग मारे गए, 1.5 करोड़ से ज्यादा ने पलायन किया, हज़ारों महिलाएँ लापता हुईं, अनगिनत परिवार आज तक बिछुड़े हुए हैं।

इस विभीषिका के दर्द को साहित्य ने भी जिया। मंटो की कहानियाँ 'खोल दो', 'ठंडा गोश्त' और 'टोबा टेक सिंह' केवल शब्द नहीं, वो ज़िंदा ज़ख्म हैं, जिनसे सियासत ने पीढ़ियों को छलनी किया। अमृता प्रीतम की पुकार 'अज्ज आखाँ वारिस शाह नूं....' में पंजाब की मातम करती आत्मा बोल उठी। यशपाल, भीष्म साहनी, इस्मत चुगताई, सबकी कलम ने उस विभाजन को महसूस किया, देखा और दुनिया को दिखाया। लेकिन यह दिन सिर्फ़ शोक का नहीं, चेतावनी का भी है, कि अगर हम फिर नफ़रत और असहिष्णुता की राह पर चले, तो इतिहास खुद को दोहराने में देर नहीं करेगा। धर्म, जाति, भाषा से पहले हमें 'इंसान' बनना होगा। आज की पीढ़ी से हमारी भावनात्मक अपील है, तुमने विभाजन नहीं देखा, पर उसके असर आज भी जीवित हैं...... दादी की कहानियों में, नाना की खामोशी में, उन ट्रंकों में जो आज भी बंद हैं, जिनमें कुछ तस्वीरें, कुछ ख़त, कुछ अधूरी पहचान छिपी हैं। जब भी कोई तुम्हें बाँटने की कोशिश करे, 'टोबा टेक सिंह' बन जाना जो न हिंदुस्तान का था, न पाकिस्तान का......... बस इंसानियत की ज़मीन पर खड़ा था।

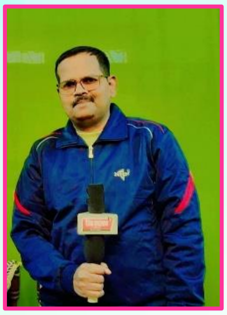

अनिल कुमार श्रीवास्तव
दैनिक जनजागरण न्यूज
लखीमपुर–खीरी

❋ स्वतन्त्रता : अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व का बोध ❋

हम सब जब हर वर्ष 15 अगस्त को भारत का राष्ट्रध्वज आकाश में गर्व से लहराता हुआ देखते हैं, तो वह केवल झंडा नहीं, अपितु उन अनगिनत आहुतियों की प्रतीक–छाया बन जाता है, जिन्होंने भारत को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया। यह दिन महज़ एक सरकारी अवकाश नहीं, बल्कि आत्ममंथन, आत्मचिंतन और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प का दिवस है। 1947 की वह ऐतिहासिक सुबह, जब भारत ने ब्रिटिश साम्राज्य की लगभग दो शताब्दियों की दासता को त्यागकर स्वतंत्रता की पहली सांस ली, तो ये केवल एक सत्ता–परिवर्तन नहीं था। यह भारत के आत्मसम्मान की पुनर्प्राप्ति थी। पंडित नेहरू का "Tryst with Destiny" भाषण उस पल का जीवंत दस्तावेज़ बन गया, जब एक देश ने अपने भाग्य को पुनः परिभाषित करने का संकल्प लिया। भारत की आज़ादी क्रांति और करुणा की सम्मिलित परिणति थी। एक ओर जहाँ भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आज़ाद जैसे क्रांतिकारियों ने अपने लहू से इतिहास लिखा, वहीं महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के पथ पर चलते हुए जनजागरण की मशाल जलाई। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की गगनभेदी आवाज– "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा"– आज भी हर भारतीय की आत्मा को झकझोर देती है। आज जब हम एक संप्रभु राष्ट्र हैं, तब हमें यह सोचना होगा कि क्या हम वास्तव में स्वतंत्र हैं?

क्या जाति, धर्म, भाषाई मतभेद, असमानता, और भ्रष्टाचार से भी स्वतंत्र हो पाए हैं? स्वतंत्रता का अर्थ केवल शासन बदलना नहीं, सोच, दृष्टिकोण और सामाजिक व्यवहार में स्वतंत्रता को आत्मसात करना भी है।

आज का भारत शिक्षा, तकनीक, विज्ञान और वैश्विक कूटनीति में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। लेकिन यदि सामाजिक समरसता, नैतिकता और उत्तरदायित्व की भावना कमजोर होती जाए, तो विकास भी खोखला हो जाएगा। हमारा राष्ट्रीय ध्वज केवल तीन रंगों का वस्त्र नहीं, वह एक संकल्प है–

केसरिया : त्याग और साहस का

श्वेत : सत्य और शांति का

हरा : समृद्धि और जीवन का

और बीच का अशोक चक्र, यह हमें स्मरण कराता है कि जीवन गतिशील है, और रुकना, ठहरना, जड़ता– ये सब पराजय की ओर ले जाते हैं। स्वतंत्रता दिवस केवल झंडारोहण, भाषण और परेडों तक सीमित न रहे। यह दिन हमें हमारे कर्तव्यों की याद दिलाने आए।

क्या हम सचमुच अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी निभा रहे हैं? क्या हम वैसा भारत बना रहे हैं, जिसकी कल्पना स्वतंत्रता सेनानियों ने की थी? इस 15 अगस्त को आइए हम एक दृढ़ संकल्प लें– हम राष्ट्र की एकता, अखंडता और आत्मा की रक्षा के लिए सदैव सजग और सक्रिय रहेंगे। हम अपने विचारों, कर्मों और व्यवहार में भारतीयता को जीवंत रखेंगे। हम केवल आज़ाद भारत के नागरिक नहीं, उत्तरदायी राष्ट्र निर्माता बनेंगे।

स्वतंत्रता केवल शौर्यगाथा नहीं, सतत साधना है।
इस साधना में हम सबका योगदान अनिवार्य है।
जय हिंद!

सर्वेश शुक्ला
ब्यूरो, मंडल प्रभारी
लखनऊ सुपर फास्ट हिन्दी दैनिक,
मंडल केसरी टाइम्स हिन्दी
साप्ताहिक

✵ विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस ✵

(21 अगस्त)

यूँ तो वरिष्ठ शब्द बहुत ही व्यापक और अपने में गूढ़ अर्थ को छिपाये हुये है। जो आशा, अनुकरण और अनुपालन की पराकाष्ठा है क्योंकि हर इंसान के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब उसका अनुभव उसके जीवन की सबसे बड़ी पूँजी बन जाता है। यही अनुभव जब सफेद बालों और काँपते कदमों, हाथों के साथ जीवन के अन्तिम पड़ाव पर होता है तब वह व्यक्ति केवल इंसान नहीं बल्कि चलता–फिरता इतिहास बन जाता है वही होते हैं– 'हमारे वरिष्ठ नागरिक'।

21 अगस्त को मनाया जाने वाला विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस हमें याद दिलाता है कि हमने जो कुछ भी पाया है– संस्कार, संस्कृति और स्थिरता, उसमे इन बुजुर्गों का बड़ा योगदान है उन्होंने जीवन भर परिवार, समाज और देश के लिए निस्वार्थ –मेहनत की और अब वे हमारे स्नेह और सम्मान के सबसे बड़े अधिकारी हैं, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज की भाग–दौड़ की दुनियाँ में हम इन्हीं बुजुर्गों को नजर अंदाज करने लगे हैं। अकेलापन, उपेक्षा और मानसिक पीड़ा यह उनके बुढ़ापे की सच्चाई बनती जा रही है। ऐसे में यह दिवस सिर्फ एक दिन नहीं बल्कि एक चेतावनी है कि अगर हमने अब भी अपने बुजुर्गों की ओर ध्यान नहीं दिया तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें भी वैसा ही व्यवहार देंगी।

हमें चाहिए कि हम हर दिन उन्हें समय दें, उनकी बात सुनें और उन्हें वह इज्जत दें जिसके वे हकदार हैं। उनके आशीर्वाद में वह ताकत है जो किसी भी तूफान से लड़ने की शक्ति दे सकती है। आइये, इस विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर वादा करें कि हम अपने बुजुर्गों को अकेला नहीं छोड़ेंगे बल्कि उनके जीवन के अन्तिम अध्याय को सम्मान, प्रेम और गरिमा से भर देंगे। बुजुर्ग बोझ नहीं वरदान हैं इन्हें संजोएँ, समझे और अपनायें क्योंकि वरिष्ठ नागरिकों का जीवन, अनुभव आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक की तरह होता है।

उनका स्नेह, अनुशासन और समझदारी परिवार को एकजुट रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकार द्वारा भी वरिष्ठ नागरिकों के लिए विभिन्न योजनाएँ जैसे वृद्धावस्था पेंशन, स्वास्थ्य सेवाएँ और छूट को सुविधाएँ चलाई जा रही हैं लेकिन इन सबसे बढ़कर समाज और परिवार की जिम्मेदारी बनती है कि वह बुजुर्गों को आत्म–सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर दें, उन्हें यह अकेलापन महसूस न होने दें, शारीरिक समस्याएं और भावनात्मक उपेक्षा का शिकार न होने दें और आज के इस विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर यह संकल्प लें कि *"हम अपने बुजुर्गों को उनका अधिकार आदर, और सहयोग अवश्य करेंगे।"*

उपेन्द्र कुमार शुक्ल
सीनियर मार्केटिंग इक्जक्यूटिव
फ्यूचर यूनिवर्सिटी
फरीदपुर, बरेली

✵ महिला समानता दिवस ✵

(26 अगस्त)— 'समानता' सुनने में, पढ़ने में एक अत्यन्त सामान्य सा शब्द है जिसे हम प्रतिदिन सुनते भी हैं, प्रयोग भी करते हैं। समानता समाज के हर वर्ग, सम्प्रदाय, पंथ से जुड़ा शब्द है जिसे व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ और आवश्यकता के अनुरूप प्रयोग करते हैं। हर एक के लिए इसका अर्थ अलग—अलग निकालते हैं।

समानता प्राचीनकाल से हमारी संस्कृति का एक अहम हिस्सा रही है। गार्गी, अपाला जैसे विदुषी महिलाएँ आज भी सम्मान के साथ याद की जाती हैं। मध्य युग आते—आते आतताइयों के भय से उन्हें घर की सीमा में रखा जाने लगा। धीरे—धीरे यह भाव एक रूढ़ि बनती गई जिसके परिणामस्वरूप कुछ विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गईं।

आज आधुनिक समय में इस शब्द का प्रयोग सबसे ज्यादा नारी समानता को लेकर हो रहा है। इसको बड़े—बड़े सेमिनार होते हैं, वाद—विवाद प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जा रही हैं जिससे प्रत्येक नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर उनका प्रयोग कर सके।

नारी समानता आज एक मूवमेण्ट बनता जा रहा है जिसमें लिंग आधारित समानता है, जिससे महिलाएं प्रखर होकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में बराबर के अधिकार और अवसर प्राप्त कर सकें। भारत सरकार ने इस असमानता को दूर करने के लिए दहेज प्रथा को अवैध, पारिवारिक सम्पत्ति में बराबर का अधिकार, समान कार्य—समान वेतन, कन्या भ्रूण हत्या को कानूनी तौर पर अपराध, बेटी बचाओ—बेटी पढ़ाओं — देश बचाओ जैसे कानून पारित किए हैं।

किन्तु दुःख का विषय है — ये शब्द केवल भाषण, लेख और सामाजिक दिखावे तक सिमट कर रह गया है। कारण कई हैं— हमारा समाज, घर परिवेष, कार्यस्थल हमें कई जगहों पर इस बात को महसूस कराते रहते हैं कि नारी पुरुष के समान नही है।

इस समानता को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक है कि घर रूपी पाठशाला से ही इसको प्रारम्भ करें। बेटियों को नारी के कर्तव्य की शिक्षा देने के साथ बेटों को भी बहन के समान समझना एवं उसके अधिकारों को सम्मान देना भी सिखाएं ताकि समाज में व्याप्त अमानवीयता में कुछ कमी आ सके।

श्रीमती इन्दू अवस्थी
सेवा निवृत्त, प्रधान शिक्षिका
सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज,
ए.बी.नगर, उन्नाव

✵ गणेश चतुर्थी ✵

परिचय :–

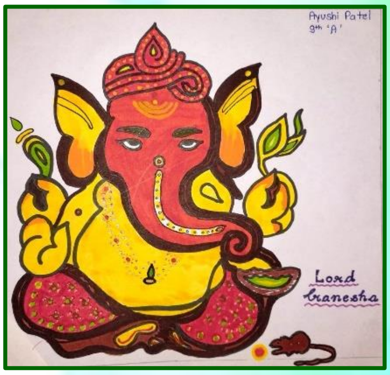

चित्रांकन–आयुषी पटेल–9A

भारत एक बहुरंगी संस्कृति और विविध परंपराओं का देश है। यहाँ हर पर्व केवल एक धार्मिक अवसर नहीं, बल्कि एक सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक संगम होता है। इन्हीं महान पर्वों में एक है गणेश चतुर्थी – जो भगवान गणेश के जन्मोत्सव के रूप में संपूर्ण भारत में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाई जाती है।

गणेश जी को *विघ्नहर्ता* (बाधाओं को दूर करने वाला), *बुद्धिप्रदाता*, और *सर्वसिद्धिदाता* माना गया है। उनका गजमुख, लंबोदर शरीर, चार भुजाएँ, और वाहन मूषक – इन सभी प्रतीकों में गहरे दार्शनिक अर्थ छिपे हैं। वे हमें विवेक, धैर्य, और समर्पण का पाठ पढ़ाते हैं। भारतीय परंपरा में कोई भी शुभ कार्य गणेश पूजन के बिना आरंभ नहीं होता।

गणेश चतुर्थी का पर्व भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मनाया जाता है। यह उत्सव दस दिनों तक चलता है और अनंत चतुर्दशी को विसर्जन के साथ संपन्न होता है। इस अवसर पर घरों एवं सार्वजनिक स्थलों पर गणेश प्रतिमाओं की स्थापना की जाती है। भक्तजन प्रतिदिन विधिपूर्वक पूजा, आरती, और भजन करते हैं। अंतिम दिन भव्य शोभायात्रा के साथ मूर्ति का विसर्जन किया जाता है।

इतिहास और सामाजिक चेतना :–

गणेश चतुर्थी की सामाजिक महत्ता तब और बढ़ी जब लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने इस पर्व को राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता संग्राम का माध्यम बनाया। उन्होंने सार्वजनिक गणेशोत्सव की शुरुआत की, ताकि समाज के सभी वर्ग एकत्रित होकर एकता का परिचय दें। यह पर्व एक धार्मिक आयोजन से बढ़कर सामाजिक जागरुकता और जनचेतना का माध्यम बन गया।

वर्तमान समय में इस पर्व के साथ पर्यावरणीय चेतना का जुड़ना भी आवश्यक हो गया है। रासायनिक रंगों और प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियाँ जलस्रोतों को दूषित करती हैं। इसलिए अब इको–फ्रेंडली गणेश मूर्तियों का चलन बढ़ा है। मिट्टी, गोबर, बीजयुक्त मूर्तियाँ आज भक्तों की नई पसंद बन रही हैं।

गणेशोत्सव केवल पूजा तक सीमित नहीं है; यह कला, संगीत, नाटक, चित्रकला, नृत्य और समाज सेवा का मंच भी है। विद्यालयों और संस्थानों में भाषण, चित्रकला, श्लोक, और निबंध प्रतियोगिताएँ आयोजित होती हैं, जिससे बच्चों में रचनात्मकता और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास होता है।

गणेश चतुर्थी केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि संवेदना, श्रद्धा, समर्पण और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति सेवा, शांति और संयम में है। यह पर्व हमें न केवल भगवान गणेश के गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है, बल्कि हमें अपने समाज और प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदार बनने का संदेश भी देता है।

गणपति बप्पा मोरया! अगले बरस तू जल्दी आ!

सुधा तिवारी
प्रधानाचार्य
सरस्वती बालिका विद्या मंदिर,
जानकीपुरम, लखनऊ

❋ मेजर ध्यानचन्द्र – राष्ट्रीय खेल दिवस ❋

भारतवर्ष के गौरवशाली इतिहास में खेलों का विशेष स्थान रहा है, और जब भारतीय हॉकी की बात आती है तो सबसे पहला नाम 'हॉकी के जादूगर' मेजर ध्यानचंद्र जी का लिया जाता है। उन्होंने न केवल हॉकी को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया, बल्कि भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गर्वित भी किया। उनका जन्मदिवस 29 अगस्त को पूरे देश में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उनका जीवन, उपलब्धियाँ और खेलों से मिलने वाले लाभ हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

मेजर ध्यानचंद्र जी का जन्म 29 अगस्त, 1905 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में हुआ था। उनके पिता श्री रामेश्वर दत्त सिंह भी ब्रिटिश भारतीय सेना में कार्यरत थे और हॉकी खेला करते थे। ध्यानचंद्र जी का बचपन साधारण परिस्थितियों में बीता, लेकिन खेल के प्रति रुचि उन्हें बचपन से ही थी। 16 वर्ष की आयु में वे सेना में भर्ती हो गए, जहाँ उनके हॉकी कौशल को पहचान मिली और उन्हें राष्ट्रीय टीम में खेलने का अवसर प्राप्त हुआ ।

ध्यानचंद्र जी का खेल जीवन अद्भुत रहा। उनका स्टिक पर ऐसा नियंत्रण था कि गेंद मानो उनके आदेशों का पालन करती हो। विरोधी खिलाड़ी कई बार उनकी स्टिक की जाँच करवाते थे, यह सोचकर कि उसमें कोई चुम्बक है।

1. 1928 – एम्स्टर्डम ओलंपिक –

ध्यानचंद्र जी ने भारत की ओर से खेलते हुए 14 गोल किए और भारत ने पहली बार हॉकी में स्वर्ण पदक जीता। भारत ने फाइनल में नीदरलैंड्स को हराया।

2. 1932 – लॉस एंजेलिस ओलंपिक –

भारत ने अमेरिका को 24–1 से हराकर फिर स्वर्ण पदक हासिल किया। ध्यानचंद्र और उनके भाई रूप सिंह ने मिलकर अधिकांश गोल किए। ध्यानचंद्र ने इस टूर्नामेंट में 12 गोल किए।

3. 1936– बर्लिन ओलंपिक –

यह ओलंपिक ऐतिहासिक रहा। भारत ने जर्मनी को फाइनल में 8–1 से हराया, जिसमें ध्यानचंद्र ने अकेले 6 गोल किए। हिटलर तक उनके खेल से प्रभावित हुए और उन्हें जर्मन सेना में पद देने की पेशकश की, जिसे ध्यानचंद्र जी ने ठुकरा दिया।

- ध्यानचंद्र जी ने अपने करियर में *'400 से अधिक अंतरराष्ट्रीय गोल किए'*, जो आज भी एक रिकॉर्ड के रूप में माना जाता है।
- उन्हें 1956 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।
- 'राष्ट्रीय खेल दिवस' हर वर्ष 29 अगस्त को मनाया जाता है, जो उनके जन्मदिवस पर आधारित है।
- भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला 'ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार' देश के सर्वोच्च खेल सम्मान के रूप में जाना जाता है।
- देश–विदेश में उनके खेल की प्रशंसा की गई। एक विदेशी अंपायर ने कहा था, यह आदमी हॉकी नहीं, जादू खेलता है।

मेजर ध्यानचंद्र जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि खेल केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का माध्यम है। खेलों से निम्नलिखित लाभ होते हैं –

1. शारीरिक स्वास्थ्य : खेल शरीर को स्वस्थ और सक्रिय बनाए रखते हैं। यह रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाते हैं।
2. मानसिक विकास : खेल तनाव को दूर करते हैं और एकाग्रता में वृद्धि करते हैं।
3. अनुशासन और समय प्रबंधन : खेल खिलाड़ी को समय का पालन और अनुशासन सिखाते हैं।
4. टीम वर्क और नेतृत्व : खेलों से टीम भावना और नेतृत्व गुणों का विकास होता है, जो भविष्य में जीवन के अन्य क्षेत्रों में सहायक होते हैं।
5. देशभक्ति और गर्व : अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश के लिए खेलना गर्व की बात होती है। मेजर ध्यानचंद्र जी ने यह गर्व कई बार देश को दिलाया।

मेजर ध्यानचंद्र जी न केवल एक महान खिलाड़ी थे, बल्कि वे अनुशासन, समर्पण और देशभक्ति के प्रतीक थे। उनका जीवन दर्शाता है कि कठिन परिश्रम और समर्पण से कोई भी व्यक्ति विश्व में पहचान बना सकता है। उन्होंने भारतीय हॉकी को शिखर पर पहुँचाया और भारत को गर्व महसूस करवाया। आज भी उनके आदर्श हमें प्रेरित करते हैं।

हमें चाहिए कि हम खेलों को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं, न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए, बल्कि एक अच्छे नागरिक बनने के लिए भी। ध्यानचंद्र जी जैसे महान व्यक्तित्वों को स्मरण करते हुए हमें अपने जीवन में ईमानदारी, लगन और खेल भावना को अपनाना चाहिए।

'शत्–शत् नमन हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद्र जी को!'

तृप्ति अवस्थी
पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी (हॉकी)
संयुक्त सचिव–
उ०प्र० हॉकी एसोसियेशन
सचिव– लखीमपुर–खीरी हॉकी एसोसियेशन

भावभीनी श्रद्धांजलि

इस दुःखद अवसर पर विद्यालय में शोक सभा आयोजित की गई।

बालिकाओं का कोना

❋ विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस ❋

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस हर साल 21 अगस्त को मनाया जाता है। इस दिन का मुख्य उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों के योगदान को स्वीकार करना और उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरुकता बढ़ाना है। यह दिन बजुर्गों के स्वास्थ्य, आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक अलगाव और दुर्व्यवहार जैसे मुद्दों को संबोधित करने की महत्ता की ओर ज़ोर देता है। यह दिन पहली बार 1991 में मनाया गया था। इसका महत्व वृद्धों द्वारा समाज में दिए गए योगदान को पहचानना और सम्मान करना, उनके अधिकारों की सुरक्षा और कल्याण को बढ़ावा देना एवं उनके स्वास्थ्य की देखभाल करना। भारत में एक बड़ी बुजुर्ग आबादी है, इसलिए यह दिन विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण–पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007 यह सुनिश्चित करने के लिए कानून के तहत अधिकार देता है कि उन्हें भरण–पोषण मिले। सरकारी सुविधाओं जैसे रेलवे किराए में रियायत और बसों में आरक्षित सीटों का लाभ उठाने का वरिष्ठजनों को अधिकार है। सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जिनमें वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (SCSS), प्रधानमंत्री वय वंदन योजना (PMVVY) और आयुष्मान भारत योजना शामिल हैं। 70 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों को आयुष्मान भारत योजना के तहत प्रति वर्ष 5 लाख रूपए तक का निःशुल्क चिकित्सा बीमा कवर मिलता है।

यह दिन हमें याद दिलाता है कि वरिष्ठ नागरिक हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

❋ महिला समानता दिवस ❋

(अतीत से वर्तमान तक का समय)

हालाँकि, यह बात तो हम सभी जानते हैं, कि हर साल महिला समानता दिवस 26 अगस्त को मनाया जाता है और यह दिवस महिलाओं के अधिकारों के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ की याद दिलाता है। यह लैंगिक समानता की दिशा में हुई प्रगति और अभी भी सामने मौजूद चुनौतियों पर विचार करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह दिन विशेष रूप–से संयुक्त राज्य अमेरिका में 1920 में संविधान के 19वें संशोधन (Amendment) के पारित होने का स्मरण कराता है। इस संशोधन से पहले महिलाओं की स्थिति सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से सीमित थी। महिलाओं को कानूनी रूप से पुरुषों के बराबर नहीं माना जाता था। उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं था तथा संपति के अधिकार अक्सर पति या पिता के नियंत्रण में होते थे। यह एक ऐसा समय था जब महिलाओं को नागरिक की बजाय आश्रित के रूप में देखा जाता था।

19वें संशोधन और महिला अधिकार आंदोलन के निरंतर प्रयासों के बाद से, महिलाओं की स्थिति में अच्छा सुधार हुआ। महिलाओं ने शिक्षा, रोजगार, राजनीति, विज्ञान, व्यवसाय, कला और खेल में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है। अब उन्हें वोट देने तथा चुनाव लड़ने का अधिकार है, संपत्ति और अन्य कानूनी अधिकारों के मामले में भी काफी सुधार हुआ है।

हालाँकि महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय रूप से सुधार हुआ है। फिर भी लैंगिक समानता एक दूर का सपना है। अभी भी लैंगिक वेतन अंतर, कार्यस्थल पर भेद–भाव तथा अन्य चुनौती भी शामिल हैं। यह दिन हमें अतीत से सीखने, वर्तमान की चुनौतियों का सामना करने और भविष्य के लिए एक समान न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना सिखाता है।

अवंतिका वर्मा
कक्षा–8A

❋ महिला समानता दिवस ❋

आज–कल 'महिला समानता दिवस' मनाया जा रहा है– क्या सच में महिलाओं को समानता मिल भी रही हैं?

महिलाओं को देवी बनाकर पूजा जाता है, लेकिन अब बारी हैं, उनको उनका हक देने की। महिलाएँ अपना हक तो वर्षों से माँग रही हैं, लेकिन उन्हें अपना अधिकार खुद लेना पड़ेगा। महिला समानता का मतलब यह नहीं है कि महिलाएँ पुरुष बन जाएं, बल्कि वे अपने फैसले खुद ले सकें और उन्हें अपने सपने पूरे करने की भी आजादी मिले।

आज की महिलाएँ माँ भी है, नेता भी है, और उन्होंने हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई हुई हैं, लेकिन उन्हें उस मुकाम तक पहुँचने के लिए न जाने कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ा होगा। लेकिन फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और अपने सपनों को पूरा किया। कुछ महिलाएँ अपने सपनों को पूरा करने के लिए उड़ान तो भरती हैं, लेकिन उनके पंखों को बीच में ही काट दिया जाता है। जैसे वर्तमान में ही हमने देखा कि कैसे एक पिता ने ही अपनी बेटी जो कि एक कामयाब टेनिस खिलाड़ी थी, उसे सिर्फ चार लोगों के ताने सुनकर ही उसके पिता ने उसकी हत्या कर दी। सिर्फ यही नहीं हम ऐसे कई लोगों की कहानियाँ सुनते हैं, जो लड़कियों को आगे बढ़ने ही नहीं देते। वर्तमान में 'महिला –सुरक्षा' एक बहुत बड़ा मुद्दा है, किंतु उनकी सुरक्षा हेतु कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे। हम दिन–प्रतिदिन कई ऐसी दुर्घटनाएँ सुनते हैं, जिसमें महिलाओं के साथ गलत व्यवहार किया जाता है।

अगर वो तुम्हारे पंख काटे तो तुम शिक्षा से, नए पंख बनाओ और उड़ जाओ, और ऊँचा उड़ जाओ ।।

अनामिका यादव
कक्षा–12E

❋ रक्षा बन्धन ❋

रक्षाबन्धन एक सनातनीय पर्व है। रक्षाबन्धन भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक है। यह श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई में राखी बाँध कर अपनी रक्षा करने का वचन माँगती हैं। इस दिन भाई अपनी बहन को उपहार देकर आशीर्वाद लेता है। रक्षाबंधन के दिन बहन अपने भाई को तरह–तरह के पकवान बनाकर खिलाती हैं। रक्षाबन्धन को 'राखी का त्योहार' भी कहा जाता है। रक्षा बन्धन का मतलब है 'रक्षा का बन्धन'।

लक्षिका तिवारी
कक्षा–8B

❋ कविता – गणपति जी ❋

चित्रांकन–अविका वर्मा–8B

जिनके गले में है माला।
वही है प्यारे गणपति लाला।।
रिद्धि–सिद्धि जिनके साथ में।
हमारे सर पर उसका हाथ है।।
इस दिन लाते हैं हम अपने घर में गणेश जी की मूर्ती।
आप सभी को हैप्पी गणेश चतुर्थी।।

अविका वर्मा
कक्षा–8B

❋ अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस ❋

(3 अगस्त)— दोस्ती एक ऐसा शब्द जिसे महसूस करना हर किसी के नसीब में नहीं होता। अगर आपके पास एक सच्चा दोस्त हैं तो ऐसा समझिए दुनिया की आधी खुशियाँ आपको ऐसे ही मिल गई। भगवान जिनसे हमारा खून का रिश्ता बनाना भूल जाते हैं उसे सच्चे दोस्त के रूप हमसे मिला देते हैं। अच्छे वक्त में तो सब साथ देते और साथ रहते हैं पर जो बुरे वक्त में साथ रहे वही सच्चा दोस्त होता है। इस रिश्ते के अनेक नाम होते हैं— दोस्त, मित्र, यार। पर निभाने का तरीका सिर्फ एक होता है— सच्चाई। सच्चे दोस्त को परेशानी बतानी नही पड़ती वह खुद समझ जाता है। हमारी सारी मुसीबतों को वह ऐसे दूर कर देता है जैसे पानी आग को। अन्त में मैं इतना ही कहना चाहूँगी कि दोस्तों का कभी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। अगर आपके पास एक अच्छा दोस्त है तो उसे हमेशा दोस्त बना के रखने के लिए उसे कभी धोखा नहीं देना चाहिए। अगर हमारे पास कोई सच्चा दोस्त नहीं है तो किताबों और ईश्वर को अपना मित्र बना लेना चाहिए।

इस दुनिया में सही शिक्षा और दीक्षा देने वाला मित्र मिलता उनको।
जो न चाहे किसी का बुरा और सही राह बताए सबको।।

❋ अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस—कविता ❋

दोस्ती वो नही जो जान देती है,
दोस्ती वो भी नही जो कभी—कभी साथ रहती है।
दोस्ती वो होती जो पानी में गिरे हुए आंसुओं को भी पहचान लेती है।।
दोस्ती है एक ऐसा धागा।
जिससे जिन्दगी ने है किसी—किसी को ही बाँधा।।
अच्छे समय में सब साथ देते हैं,
पर जो बुरे समय में साथ रहें वो होता है यार।
दुख तो सभी को बताना आता है,
पर जो दुःखी चेहरे पर भी ला दे मुस्कान वो होता है यार।।
समंदर जैसी गहरी कठिनायिओं को भी,
एक ही कदम में पार करा दे ऐसा होता है यार।
तकलीफों को पास भी ना आने दे,
परेशानियों के आने पर ढाल बन कर खड़ा हो जाए,
ऐसा होता है यार।
सच्चा दोस्त पाकर हर किसी का चेहरा खिलता है।
ऐसा सच्चा दोस्त किसी—किसी को ही मिलता है।।

आयुषी वर्मा
कक्षा—10C

❋ जय श्री गणेश – कविता ❋

गणेश चतुर्थी का दिन आया है।
सबके मन को भाया है।।
आया जन्म दिन मनाऐंगें।
10 दिन भजन गाएगें।।
गणपति बप्पा आये हैं, साथ खुशहाली लाये हैं।
गणेश जी के आशीर्वाद से ही हमने सुख के गीत गाये हैं।।
गणेश जी का रुप निराला है।
चेहरा देखो कितना भोला–भाला है।।
जब भी हम पर आए कोई मुसीबत।
गणेश जी ने ही तो, हमें संभाला है।।
गणेश जी की ज्योति से नूर मिलता है।
सबके दिलों को सुकून मिलता है।।
जो भी जाता है गणेश जी के द्वार।
कुछ न कुछ जरूर मिलता हर बार।।
आज बप्पा का घर में वास है।
तभी तो यह दिन इतना खास है।।

रिद्धिमा मिश्रा
कक्षा–8B

❋ कविता – रक्षाबन्धन ❋

जिससे अच्छा कुछ नही यार।
वही है भाई बहन का प्यार।।
बहन भाई की कलाई में राखी है बाँधती।
रक्षा करने का अपने भाई से वचन है माँगती।।
बहन भाई को जान से प्यारी है।
यही भाई बहन की जोड़ी सबसे न्यारी है।।
इसलिए हर बहन अपने भाई की दुलारी है।।
इसलिए हर बहन अपने भाई की दुलारी है।।

❋ कविता – श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ❋

यशोमती है जिनकी मइया।
वही है मोहन, कृष्ण कन्हैया।।
वह वन चराने जाता था गइया।
बलराम हैं उसके बड़े भइया।।
मोर मुकुट और बाँसुरी, है जिनके हाथ में।
वो कृष्ण–कन्हैया हैं हमारे साथ में।।

शिप्रा तिवारी
कक्षा–8B

❋ कविता – भगवान श्री कृष्ण ❋

श्री हरि के अवतारों में से, जिनका था मान बडा।
देवकी की आठवी संतान, कृष्ण उनका नाम पड़ा।।
बन्दीगृह में जन्म हुआ, कंस के वह काल थे।
यशोदा ने किया पालन–पोषण, नंद के वह लाला थे।।
पूतना का वध किया, पिता का अभिमान बने।
चौसठ कलाएँ सीख के वे, कृष्ण भगवान बने।।
कालिया नाग के ऊपर, जिन्होंने था नृत्य किया।
धर्म बचाने के खातिर, उन्होंने योगदान सर्वोच्च दिया।।
मिट्‌टी खाकर जब उन्होंनें, अपना मुख खोल दिया।
तब उन्होंने ब्रह्माण्ड के रहस्यों का उद्‌मम खोल दिया।।
रुक्मिणी से विवाह कर वें, माँ राधा को छोड़ गए।
गोकुल को भी छोड़ गए, जब प्रेम का नाता तोड़ गए।।
गीता के उपदेश देकर वे, जीत के भी हार गए।
छोड़ जाएगें सब तुमको, इसे भी स्वीकार गए।।
कपटी उन्हें कहने लगे, इससे न इनकार किया।
डूब जाएगी द्वारिका, इसे भी स्वीकार लिया।
कंस की योजनाओं को, जिसने था विफल किया।
प्रेम की शक्ति से जिसने, कंस को भी तार दिया।।
अवतार कार्य सम्पूर्ण कर वे, स्वर्ग को सिधार गए।
उन्हें पूजने के तरीके हम निकालते हैं नए–नए।।

वैभवी श्रीवास्तव
कक्षा–9A

❋ कविता – कान्हा की लीला ❋

जिस की गोल–मोल सी आँखे हो,
सांवjा सा रंग हो ।
बात कहे यूं ऐसी,
सब सुन के लिए बेचैन हों। ॥1॥
सिर पर जिसके मोर पंख,
कमर में जिसके बांसुरी।
चाल चले वो ऐसी,
कि पृथ्वी खुश हो जाती।। ॥2॥
मैया जब भी उलाहना पाती,
तब कान पकड़ के लाती।।
बजाये जब वो बांसुरी,
तब राधा दौड़ी आती। ॥3॥
जब राधा करें शिकायत,
तब मैया डाँट लगाती।।
जब राधा गुस्सा होती,
तब कान्हा रास रचाए।। कान्हा रास रचारे, कान्हा रास रचाऐ ॥4॥

वेदिका मिश्रा
कक्षा–8B

❋ कहानी – समय का चलन ❋

एक शहर में एक गौरी नाम की लड़की रहती थी। उसकी उम्र लगभग 12 साल की थी। उसके साथ उसके परिवार में दादी, बाबा, माता–पिता, भाई–बहन और बुआ रहती थीं। पिता एक मेहनती और दयालू आदमी थे। उसके पिता की दुकान थी। और उसकी माता घरेलू महिला थीं। एक बार उनके करीबी रिश्तेदार की शादी थी। शादी में गौरी और उसके माता–पिता जाने के लिए तीनों तैयार हुए और निकले। रास्ते मेंगौरी के भूख लगी तो गौरी ने पिताजी से कहा कि "पिताजी मेरे पेट में बहुत चूहे कूद रहे हैं। मुझे कुछ खिला दीजिए अन्यथा ये चूहे बेहाश हो जाएंगे। पिताजी ने एक ढाबे पर बाइक रोकी। फिर उन्होंने पेट भर खाना खाया और तीनों महाशय चल दिए। रास्ते में बदकिस्मती से एक सामने ट्रक आ गया और ट्रक से बाइक टकराकर खाई में गिर गई। भगवान की कृपा से उस दुर्घटना में गौरी और उसकी माँ को तो ज्यादा चोट नहीं लगी परन्तु उसे पिता के दाएं पैर में काफ़ी चोट लग गई। जिसके कारण वे चार महीनों तक परेशान रहे और चार महीनों तक उनका कई जगह से इलाज हुआ परन्तु कोई लाभ नही हुआ और घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी। गौरी अपने विद्यालय साइकिल से जाती थी। उसके भाई–बहन को पिताजी के मित्र छोड़ने जाते थे परन्तु उनके मित्रों ने भी उनका साथ छोड़ दिया। तब गौर के पिताजी हिम्मत करके स्वयं धीरे–धीरे बच्चों को विद्यालय छोड़ने जाते और दुकान भी संभालते थे। धीरे–धीरे उनके घर की आर्थिक स्थिति सही हो गई। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि इमें हमेशा आत्मनिर्भर रहना चाहिए और दूसरों की मदद करनी चाहिए।

वेदिका मिश्रा
कक्षा–8B

❋ Friendship - Day ❋

This year 2025 friendship day will be celebrated on 3rd August, the very first Sunday of month August. When our monthly e-magazine 'Sanatan Swara' will be out in the month of August on that specific day.

Furthermore:- The importance of celebrating friendship day is to spread the positivity and understanding among individuals. The most Wondering fact about it is that, It has also a surprising history, so I would like to Express my knowledge about that history.

Consequently:- The idea of friendship day began in 1930 in United States (US) proposed by Joyceball, he was the founder of Hallmark cards to dedicate a day for friends to Exchange Cards. It was officially recognised by US Congress in 1935 it was necessary to celebrate that day because- Harsh Effect of worldwar 1st and Later in 2011 the United Nations declared July 30 as international friendship day. For just peace across the Globe.

CONCLUSION:- We should celebrate friendship day for peace and understandings.

Yashasvi Mishra
Class-9A

चित्रांकन–मनस्वी वर्मा–6A

चित्रांकन–गुंजन राज–6B

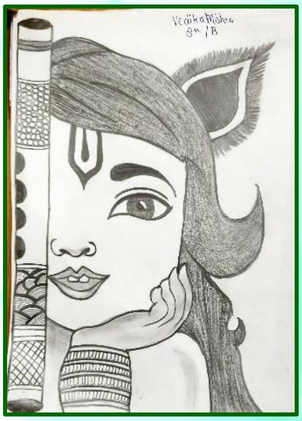

चित्रांकन–वेदिका मिश्रा–8B

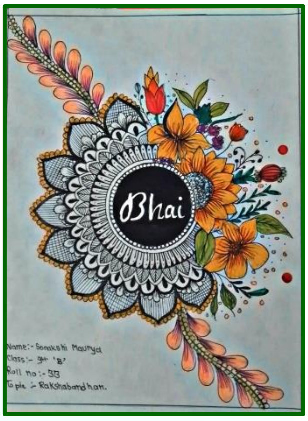

चित्रांकन–सोनाक्षी मौर्या–9B

चित्रांकन–काजल निषाद–9B

चित्रांकन–प्रशस्ति अवस्थी–12E

चित्रांकन–दिव्यांशी अवस्थी–10C

चित्रांकन–निलोफर मिश्रा–6A

चित्रांकन–पंखुड़ी मिश्रा–8A

चित्रांकन–प्रियांशी राज–8A

चित्रांकन–लक्षिका तिवारी–8B

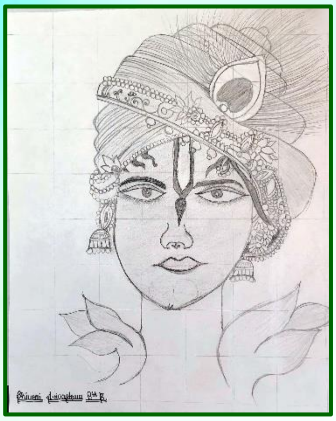

चित्रांकन–शिवानी श्रीवास्तव–8B

चित्रांकन—आनन्दी कटियार—8B

चित्रांकन—आद्या गहोई—10C

चित्रांकन—ऐंजल—9A

चित्रांकन—अनवी दीक्षित—9A

चित्रांकन—अनुष्का बहोरी—9C

चित्रांकन—अनुष्का बहोरी—9C

चित्रांकन—अंशी वर्मा—7C

चित्रांकन—अभिज्ञा शुक्ला—7C

चित्रांकन—अवंतिका वर्मा—8A

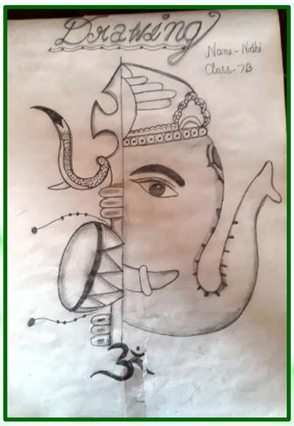

चित्रांकन—निधि—7B

चित्रांकन—अक्षिता सोनी—8A

चित्रांकन—अक्षिता सोनी—8A

Current Affairs

जुलाई 2025 के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाक्रम:

जुलाई 2025 वैश्विक और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय घटनाक्रमों से भरा महीना रहा।

I. वैश्विक घटनाक्रम

30 जून - 3 जुलाई: विकास के लिए वित्तपोषण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (FFD4)

स्पेन के सेविले में आयोजित इस संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के लिए वित्तपोषण अंतर को पाटना और विकासशील देशों के ऋण संकटों को संबोधित करना था। 'सेविले कमिटमेंट' और 'सेविले प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन' को अपनाया गया, लेकिन नागरिक समाज संगठनों ने इसे "महत्वाकांक्षा से बहुत कम" बताया।

2 जुलाई - 27 जुलाई: प्रमुख वैश्विक खेल और सांस्कृतिक आयोजन

जुलाई में विंबलडन 2025, यूईएफए महिला यूरो 2025, और ओपन चैंपियनशिप गोल्फ 2025 जैसे कई हाई-प्रोफाइल खेल आयोजन हुए, साथ ही एस्टोनियाई गीत और नृत्य महोत्सव और फ्रांस का बैस्टिल डे जैसे सांस्कृतिक उत्सव भी मनाए गए। इन आयोजनों ने वैश्विक पर्यटन और मेजबान देशों की अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा दिया।

14-18, 21-23 जुलाई: सतत विकास पर उच्च-स्तरीय राजनीतिक मंच (HLPF)

संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (ECOSOC) के तत्वावधान में आयोजित HLPF 2025 ने 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए एक मंत्रिस्तरीय घोषणा को अपनाया। मंच ने एसडीजी 3, 5, 8, 14 और 17 की गहन समीक्षा की। घोषणा को व्यापक समर्थन मिला, लेकिन इज़राइल और संयुक्त राज्य अमेरिका ने इसके खिलाफ मतदान किया।

29 जुलाई: आईएमएफ विश्व आर्थिक आउटलुक अपडेट

आईएमएफ ने जुलाई 2025 के विश्व आर्थिक आउटलुक अपडेट में "लगातार अनिश्चितता के बीच अस्थिर लचीलापन" पर प्रकाश डाला। वैश्विक विकास अनुमानों को ऊपर की ओर संशोधित किया गया (इस वर्ष 3.0% और अगले वर्ष 3.1%)। हालांकि, व्यापारिक वातावरण में अनिश्चितता और उच्च सार्वजनिक ऋण जैसे जोखिम "दृढ़ता से नकारात्मक" बने हुए हैं।

28–30 जुलाई: संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में दो-राज्य समाधान पर समर्थन

एक संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में उच्च-स्तरीय प्रतिनिधियों ने इज़राइल से एक फिलिस्तीनी राज्य के लिए प्रतिबद्ध होने का आग्रह किया और दो-राज्य समाधान के लिए "अटूट समर्थन" व्यक्त किया। 'न्यूयॉर्क घोषणा' ने एक स्वतंत्र, विसैन्यीकृत फिलिस्तीन की परिकल्पना की। हालांकि, इज़राइल ने दो-राज्य समाधान की धारणा को खारिज कर दिया।

II. भारत में महत्वपूर्ण घटनाक्रम

4 जुलाई: मणिपुर में सुरक्षा बलों द्वारा हथियारों की बरामदगी

मणिपुर में चल रही जातीय हिंसा के बीच सुरक्षा बलों द्वारा संयुक्त अभियानों में जुलाई में कई बार बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किए गए (4 जुलाई को 203 बंदूकें, 15 जुलाई को 86 बंदूकें, 26 जुलाई को 90 बंदूकें, 28 जुलाई को 155 बंदूकें)। यह राज्य में हथियारों के व्यापक प्रसार और अस्थिर स्थिति को दर्शाता है।

8-10 जुलाई: प्रमुख दुर्घटनाएँ और प्राकृतिक घटनाएँ

जुलाई में भारत में कई गंभीर दुर्घटनाएँ हुईं: तमिलनाडु के विरुधुनगर में एक आतिशबाजी कारखाने में आग से 10 लोगों की मौत (8 जुलाई), गुजरात के वडोदरा में पुल ढहने से 11 लोगों की मौत (9 जुलाई), राजस्थान में भारतीय वायु सेना का प्रशिक्षण विमान दुर्घटनाग्रस्त (9 जुलाई), और हरियाणा में भूकंप से 2 लोगों की मौत (10 जुलाई)। गोवा में जुलाई 2025 में 1,186 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य से 13% अधिक थी।

11 जुलाई: मराठा सैन्य परिदृश्य यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित

भारत के मराठा सैन्य परिदृश्यों को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थलों के रूप में नामित किया गया, जो भारत की 44वीं ऐसी संपत्ति है। इसमें महाराष्ट्र और तमिलनाडु के 12 प्रमुख किले शामिल हैं, जो मराठा सैन्य प्रभुत्व और रणनीतिक दूरदर्शिता को दर्शाते हैं।

21 जुलाई: बॉम्बे हाई कोर्ट द्वारा 2006 मुंबई ट्रेन बम धमाकों के आरोपियों को बरी करना और

सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्थगन बॉम्बे हाई कोर्ट ने 2006 के मुंबई ट्रेन बम धमाकों के सभी 12 आरोपियों को सबूतों की कमी के कारण बरी कर दिया। हालांकि, महाराष्ट्र राज्य सरकार की अपील के बाद, सुप्रीम कोर्ट ने 24 जुलाई को इस फैसले पर रोक लगा दी।

21 जुलाई: जगदीप धनखड़ का उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा

जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई 2025 को "स्वास्थ्य कारणों" का हवाला देते हुए भारत के उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया। उनका कार्यकाल मुखरता और न्यायपालिका के साथ संस्थागत घर्षण से चिह्नित था। चुनाव आयोग ने 9 सितंबर 2025 को उपराष्ट्रपति चुनाव की घोषणा की।

23 जुलाई: भारत द्वारा चीनी नागरिकों के लिए पर्यटक वीजा फिर से शुरू करना

भारत ने चीनी नागरिकों के लिए पर्यटक वीजा फिर से जारी करना शुरू कर दिया, जिससे 2020 की सीमा झड़पों के बाद लगाई गई पांच साल की रोक समाप्त हो गई। यह दोनों देशों के बीच संबंधों के सामान्यीकरण की दिशा में एक प्रतीकात्मक कदम है।

25 जुलाई: राजस्थान में स्कूल की छत ढहने से बच्चों की मौत

राजस्थान के झालावाड़ जिले के पिपलोदी में एक स्कूल की छत ढहने से सात बच्चों की मौत हो गई। इस घटना ने ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे, विशेष रूप से स्कूलों की सुरक्षा स्थिति के बारे में गंभीर चिंताएँ बढ़ाईं।

27-29 जुलाई: अन्य महत्वपूर्ण घटनाएँ

हरिद्वार में मनसा देवी मंदिर में भीड़ के कुचलने से छह लोगों की मौत (27 जुलाई), छत्तीसगढ़ में जबरन धर्मांतरण के आरोप में दो ननों की गिरफ्तारी (27 जुलाई), श्रीनगर में तीन लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों को मार गिराया गया (28 जुलाई), और देवघर में बस दुर्घटना में 18 कांवर यात्रा तीर्थयात्रियों की मौत (29 जुलाई) जैसी घटनाएँ हुईं।

30 जुलाई: नासा-इसरो निसार उपग्रह का प्रक्षेपण

नासा-इसरो सिंथेटिक एपर्चर रडार (NISAR) उपग्रह को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से GSLV-F16 रॉकेट का उपयोग करके अंतरिक्ष में लॉन्च किया गया। यह नासा और इसरो के बीच एक संयुक्त परियोजना है, जिसे पृथ्वी की उच्च-रिज़ॉल्यूशन, हर मौसम, दिन-रात की इमेजिंग प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमताओं में एक महत्वपूर्ण छलांग को दर्शाता है।

31 जुलाई: अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भारतीय निर्यात पर 25% टैरिफ लगाना

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारतीय निर्यात पर 25% टैरिफ लगाया। यह निर्णय आंशिक रूप से रूस से भारत द्वारा तेल खरीद के कारण लिया गया था। व्यापार विशेषज्ञों ने चेतावनी दी कि इस कदम से भारत के प्रमुख निर्यात क्षेत्रों को नुकसान हो सकता है। भारत सरकार ने "रणनीतिक, आत्मविश्वासपूर्ण और स्पष्ट रूप से अवहेलनापूर्ण" प्रतिक्रिया व्यक्त की।

जुलाई (मास पर्यंत): प्रमुख भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव

जुलाई 2025 में भारत में कई महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव शुरू हुए, जैसे श्रावणी मेला, श्रावण बिलिमोरा उत्सव, वंदे सोमनाथ, और सपुतारा मानसून महोत्सव। ये उत्सव भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए उनके महत्व को दर्शाते हैं।

III. निष्कर्ष

जुलाई 2025 वैश्विक और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण परिवर्तनों और चुनौतियों का महीना था। वैश्विक स्तर पर, बहुपक्षीय प्रयासों को शक्ति असंतुलन और संरक्षणवादी व्यापार नीतियों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा। भारत के लिए, यह महीना वैज्ञानिक प्रगति और सांस्कृतिक पहचान में उल्लेखनीय उपलब्धियों से चिह्नित था, लेकिन इसने आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों, बुनियादी ढाँचे की सुरक्षा चिंताओं और न्यायिक प्रणाली की जटिलताओं को भी उजागर किया। अमेरिकी टैरिफ के जवाब में भारत की मुखर प्रतिक्रिया ने वैश्विक व्यापार में इसकी बढ़ती रणनीतिक स्वायत्तता को रेखांकित किया।

आगामी योजनाएँ

- 04 अगस्त से 8 अगस्त तक – द्वितीय मासिक परीक्षाएँ।
- 15 अगस्त – स्वतन्त्रता दिवस एवं जन्माष्टमी कार्यक्रम।
- 15, 16, 17, 18 अगस्त – संकुल स्तरीय आचार्य विकास वर्ग।

मीडिया की नजर में

कॅरियर काउन्सलिंग से छात्राओं को मिला भविष्य का मार्गदर्शन

अपनी रुचि व योग्यता के अनुसार ही करें कॅरियर का चयन, विशेषज्ञों की राय

प्राइवेट स्कॉलरशिप्स तथा जियोलॉजी, जियोफिजिक्स जैसे विषयों में ग्रेजुएशन के संभावित विकल्पों की विस्तृत जानकारी दी।कर्नल सी.पी. मिश्रा ने अपने प्रेरणादायक वक्तव्य में कहा, कॅरियर वही चुनें जिसमें आपकी रुचि और सामर्थ्य हो, तभी सफलता और संतुष्टि दोनों प्राप्त होंगी। उन्होंने छात्राओं को NDA, CDS, SSC के माध्यम से भारतीय सेना में जाने के अवसरों से अवगत कराया और सामान्य ... पत्रिका नियमित रूप से पढ़ने ...ाह दी।डॉ. रूचिरानी गुप्ता ने ... क्षेत्र में कॅरियर के विविध ... पर प्रकाश डालते हुए ... को अपनी प्रतिभा को ... हेतु प्रेरित किया।कार्यक्रम के ... पर प्रधानाचार्य शिप्रा बाजपेई ... अतिथियों एवं सहभागियों का ... व्यक्त किया। इस अवसर पर ... के सभी शिक्षकगण भी ... रहे।

श्रद्धा एवं कृतज्ञता की भावना के साथ मनाया गया गुरु पूर्णिमा पर्व

राष्ट्र सेवा के उद्देश्य से आयोजित हुआ गुरु दक्षिणा कार्यक्रम

अदम्य साहस एवं बलिदान का दिन है कारगिल विजय दिवस

लखीमपुर-खीरी (स्वरूप संवाददाता)। विश्व के कठिनतम युद्धों में एक कारगिल युद्ध की 26वीं वर्षगांठ के ...

प्रधानमंत्री भारतरत्न स्व0 श्री अटल बिहारी बाजपेई मित्रता के लिए पाकिस्तान गए थे और पीछे से पाकिस्तान ने कारगिल पर कब्जा कर लिया। कारगिल का युद्ध विश्व का सबसे कठिन युद्ध था। क्योंकि इसमें वायुसेना आदि नही केवल पैदल सैनिकों ने अपने अदम्य साहस से घुटनों के बल रेंगते हुए पहाड़ों पर बैठे दुश्मन पाकिस्तान के आतंकवादियों के वेश में आए हुए सैनिको को मार गिराया था। इस अवसर पर विद्यालय की छात्रा बहनों ने अपने देशभक्ति भरे हुए भाषण एवं कविताओं के माध्यम से सभी को जोश से भर दिया। विद्यालय प्रबन्धक चन्द्र भूषण साहनी ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें हमारे वीर सैनिकों के सर्वोच्च बलिदान को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। विद्यालय की प्रधानाचार्य शिप्रा बाजपेई ने आए हुए अतिथि कर्नल सी.पी. मिश्रा के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन विद्यालय की सहायक आचार्या नेहा दीक्षित ने किया।

किशोरियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रशिक्षण

संसू, जागरण • लखीमपुरः विद्या भारती के तत्वावधान में शनिवार को नगर के एक विद्यालय में संकुल स्तरीय किशोरी विकास वर्ग, वंदना प्रमुखों का प्रशिक्षण वर्ग एवं प्रधानाचार्य समीक्षा बैठक का भव्य आयोजन किया गया। इस एक दिवसीय कार्यक्रम में संकुल के 13 विद्यालयों की लगभग 150 छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन व वंदना से हुई। विद्यालय की प्रधानाचार्या शिप्रा बाजपेई ने सभी अतिथियों का स्वागत व परिचय प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि उत्तम कुमार, प्रान्तीय प्रमुख (संस्कृति ज्ञान परीक्षा) तथा विशिष्ट अतिथि सुरेश सिंह, सम्भाग निरीक्षक (सीतापुर) उपस्थित रहे। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि बालिकाओं की शिक्षा केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का आधार है, इसलिए उनका सर्वांगीण विकास अत्यंत आवश्यक है।

लखनऊ सुपरफास्ट खबरें

कानपुर/उन्नाव/हमीरपुर/प्रतापगढ़

संस्कार, सृजन और समर्पण का संगम: किशोरी विकास वर्ग में खिला प्रतिभा का पुष्प

विद्या भारती की सोंधी सोच के संग, छात्राओं ने सीखा आत्मबल, सृजन व सजगता का पाठ

... की और छात्राओं को निडर, सजग व आत्मविश्वासी बनने का मंत्र दिया।कार्यक्रम के समापन पर संभाग निरीक्षक सुरेश सिंह और संकुल प्रमुख ...

बालिकाओं के लिए लगाया स्वास्थ्य जागरूकता शिविर

कार्यक्रम में उपस्थित छात्राएं • जागरण

संसू, जागरण • लखीमपुर: रोटरी क्लब लखीमपुर खीरी के तत्वावधान में सनातन धर्म सरस्वती ... मंदिर इंटर कालेज ... लिए स्वास्थ्य जागरू... आयोजन किया गया ... वक्ता के रूप में प्रसि... विशेषज्ञ डा. श्वेता ... रहीं। शिविर में किश... धर्म के दौरान होने वा... अनियमितताओं, उन... समाधान के उपायों ... भाषा में जानकारी दी गई। उन्होंने कहा कि मासिक धर्म से जुड़ी समस्याएं ...

दैनिक जनजागरण

सत्य और तथ्य के साथ

www.dainikjanjagran.in

छात्राओं की प्रतिभा को लगे पंख, हुई हाउस एक्टिविटी की शानदार शुरुआत

लखीमपुर खीरी, 26 जुलाई 2025। सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इंटर कॉलेज में शनिवार को छात्राओं की बहुमुखी प्रतिभा को मंच ...

डिजिटल समाचार सेवा 8800127319

विचारों की जंग में विज्ञान बना विमर्श का केंद्रबिंदु

प्रो. प्रफुल्ल चंद्र राय जयंती पर सरस्वती विद्या मंदिर मिश्राना में वाद-विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न

अमर साहित्य विभूतियों की जन्मजयंती पर श्रद्धांजलि सभा - तुलसी और प्रेमचंद को काव्यांजलि